A

DICTIONARY

OF THE

COMMERCIAL PRODUCTS OF THE WORLD.

जगत व्यापारिक-पदार्थ कोश ।

EDITED BY

THAKUR PRASAD KHATTRI,

AUTHOR OF

देशी करघा *(On Handloom weaving)*, सुघड़ दर्जिन *(On Sewing)*, सोनारी *(On Gold works)*, सीने की कल *(On Sewing machines and their adjustment)*, विज्ञान-पदार्थ कोष व रसायन कोष *(Glossaries on Physics and Chemistry)*, हमारी प्राचीन ज्योतिश *(Our ancient Astronomy)*, हैदर-अली *(Hyder Ali [Trans.])*, लखनऊ की नवाबी *(Nasiruddin Hyder [Trans.])* &c. &c.

Winner of 3 silver medals offered by the Nagari Pracharini Sabha on the best Essays (in competition) on Geology, Astronomy and The North Pole.

AND

EDITOR OF

THE BYAPARI AND KARIGAR

(An Industrial Journal in Urdu and Hindi)

PRINTED AT THE BYAPARI AND KARIGAR PRESS
GODOWLIA, BENARES CITY

1st Edition] 1912. [Price Rs. 5/-

Printed by Thakur Prasad Khattri,
At the Byapari & Karigar Press, Godowlia, Benares City.

A

DICTIONARY

OF THE

COMMERCIAL PRODUCTS OF THE WORLD.

जगत व्यापारिक-पदार्थ कोश ।

Registered under Sec. 18, Act XXV of 1867.

भूमिका।

इस ग्रंथ के नाम ही से प्रगट हो जाता है कि इस में क्या विषय है और इस सम्बंध में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रह जाती। सम्पादक ने इस में न तो कोइ नई कल्पना की है और न कोई नूतन प्रसंग ही छेड़ा है। इस ग्रंथ के प्रस्तुत करने का अभिप्राय और लक्ष यह है कि भिन्न भिन्न पदार्थ के विषय में संक्षेप बृत्तान्त उन के व्यपारिक उपयोग का लिखा जाय और यह बतलाया जाय कि वे कहां होते हैं, किस काम में आते हैं, किस प्रकार से वे व्यवहार और व्यापार के योग्य बनाये जाते हैं और उन का कितना व्यापार होता रहता है— विशेष करके हिन्दुस्तान में—इत्यादि इत्यादि, यह तो व्यापारियों के लाभ की बातें हुई। कारीगरों और दस्तकारों के हितार्थ भी छोटे छोटे लाभ-कारी नये नये लटके और विधान तद् तद् विषयों के अन्तरगत लिख दिये गये हैं कि जिनकी सहायता से वे लोग बिना अधिक परिश्रम के उत्तम काम तयार कर सकें। लेखक का यह उद्योग प्रगट रूप से प्रसंग रहित समझा जा सकता है, परन्तु जब हिन्दुस्तान की वर्तमान अवस्था और दशा पर ध्यान कर के बिचारा जायगा तब इन सब बातों का एक स्थान में संग्रह कर देना अधिक उपयोगी और आवश्यक जान पड़ता है। इस कारण से लेखक का यह उद्योग आशा है कि क्षमा दृष्टि से देखा जायगा।

हिन्दी भाषा में ऐसे ग्रंथ का अभाव था। उसी की पूर्ती के निमित्त ग्रंथ-कर्ता ने लोकोपकारार्थ परिश्रम कर के अनेक मान्य ग्रंथों और सरकारी रिपोर्टों इत्यादि से संग्रह कर, इस पुस्तक का सम्पादन किया है। इस ग्रंथ को पूर्ण बताना भूल होगी क्योंकि एक व्यक्ति के उद्योग और संग्रह करने में भूल चूक और त्रुटियों का रह जाना सम्भव और स्वभाविक बात है, तथापि जो कुछ भी उद्योग हुआ है वह बहुत कुछ सहायकारी और लाभदायक होगा। आशा की जाती है कि विद्वान पाठक गण इसे सादर ग्रहण करेंगे।

विषय क्रम बहुत सीधा रक्खा गया है। पदार्थों के नाम अंग्रेज़ी दिये गये हैं और अंग्रेज़ी वर्णमाला के क्रमानुसार ही वे एकत्रित किये गये हैं कि जिस में उन के पता लगाने में कठिनता न हो, क्योंकि बहुत ज्यादा व्याापारिक-पदार्थ ऐसे हैं जिन के लिये कोई शब्द भाषा का नहीं है और जिन जिन के भाषा में नाम हैं भी तो प्रांत भेद से उन के कई कई नाम हैं। ऐसी अवस्था में किस नाम को प्रधानता दी जाय इस का निर्णय करना कठिन जान कर उक्त क्रम ही सहज प्रतीत हुआ। किन्तु अन्त में हिन्दी नामों की एक सूची लगा दी गई है जिस से उन पदार्थों के खोजने में कष्ट न हो जिन के नाम भाषा में हैं।

लोकल गवरमेंट की सहायता और आश्वास की कृतज्ञता प्रकाश और हार्दिक धन्यवाद देना अत्यन्त आवश्यक और अपना धर्म है क्योंकि बिना उस की सहायता, के कदाचित यह ग्रन्थ 'ताक़' ही पर पड़ा रह जाता और कृमियों का उपभोग होता।

अन्त में अपने सहोदर कनिष्ट भ्राता बाबू दुर्गा प्रसाद बी० ए० को धन्यवाद दे देना उचित है कि जिन्होंने अपना अमूल्य समय मेरे लिये इस ग्रंथ की पुनरावृत्ति करने के लिये दिया।

सम्पादक

PREFACE.

The Title of this work practically suffices to indicate the character of the contents, without the aid of any prefatory explanation. The author has no new theories to advance, nor any discoveries to mention; his aim is to give a short account of the various economic products from the practical point of view of their industrial and commercial use, and to deal with the conversion of raw material into finished products of trade.

There is a great want of such a work in vernacular to serve as a glossary for consultation and help for the traders and craftsman of this country. The chief speciality of this work is its dealing with some practical receipes of a few important articles, with a view to supply information about their practical use. I think I will be excused for this out-of-the-way attempt at dealing with such matters in this work. But in the present state of our country, such a collection in a single book intended for every-day easy reference, may after all prove beneficial and handy.

The method of treatment in the book is simple. The list of Economic raw material has been arranged according to the English Alphabetical order to avoid inconveniences which might be felt otherwise, as many articles have no vernacular names, while others have several.

To render this book still more useful and handy, a list of vernacular names in Alphabetical order has been appended.

Readers would do well to remember that this work is an attempt of one individual and naturally like all first

attempts, cannot be perfect in all branches. Notwithstanding its short-comings and omissions it will the author hopes, be generously received by the public.

I cannot conclude without tendering my hearty thanks and gratitude to the Local Government, which has been pleased to patronize and encourage the author in publishing it.

Lastly, my acknowledgements are due to my affectionate younger brother Babu Durga Prasad, B. A., who has very kindly devoted his valuable time to revising this work.

The Author.

A DICTIONARY OF COMMERCIAL PRODUCTS OF THE WORLD.

जगत व्यापारिक-पदार्थ कोश।

A.

Abaca (अबाका)—यह एक किस्मि का पेड़ है जो अराकान, अंडमान टापू और फीलीपाईन्स टापू में पाया जाता है इसी पेड़ से मनीलाहेम्प (Manila Hemp) नामक मशहूर रेशे निकलते हैं जो इस पेड़ के तने के लम्बे लम्बे छिलके छील कर डंडों से पीटने पर निकलते हैं और जब रेशे सूख जाते हैं तब उन्हें धोकर और लगे हुवे गूदे साफ़ करके केवल रेशों की तार अलग कर लेते हैं। मोटे रेशों से रस्सियां बनाई जाती हैं और महीन रेशों से 'दरेस,' 'बुक,' 'मसहरी' इत्यादि बिनी जाती हैं। जिस पेड़ से यह रेशे निकलते हैं वह असल में फिलीपाईन टापू का है, पर अब यह आसाम, आराकान के पहाड़ों और अंडमन टापू में भी बोया जाने लगा है, इस के रेशों में तारीफ़ यह है कि यह बहुत हलका और बहुत मज़बूत होता है। इन रेशों की बनी हुई पुरानी रस्सियों से मशहूर काग़ज़ 'मनीला-पेपर' (Manila paper) तयार किया जाता है। इस के रेशे की बड़ी क़दर और बिकरी इंगलेंड और अमेरिका में होता है। केवल फीलीपाइन टापू में इसका रेशा हर साल १० लाख गांठ निकलती है, और ग्रेटब्रिटेन (इंगलड) मे ही ५० लाख गांठ कीमती २½ करोड़ रुपये का जाया करता है। इसे (Manila Hemp) मनिला का पटुआ भी कहते हैं॥

Abietine (अबिटीन)—यह कालीफ़ोरनियां के एक किस्म के पेड़ की राल है, जो भभके में खींच कर निकाली जाती है। तेल या चरबी का धब्बा इस से साफ़ हो जाता है, इस काम के लिये यह बड़ी अच्छी चीज़ है और यह पेट्रोलियम बेनज़िन (Petrolium Benzine) की जगह भी काम में लाई जाती है॥

Acacia (एकाशिया)—कीकर, बबूल इत्यादि जाति के पेड़ों का नाम है, इस की कई जाति हैं। भारतवर्ष में यह कई प्रकार का पाया जाता है। इन पेड़ों में से गोंद या चमड़ा बनाने का कषाव (Tan) निकलता है। जिस के लिए इनकी छाल का बहुत व्यापार होता रहता है। कत्था भी इसी जाति के एक पेड़ में से निकाला जाता है॥

Acaroid Resin (एकरॉयड रेज़िन)—यह एक तरह की राल है जो Xanthorrhea hastilis नामक पेड़ में से निकलती है। यह पेड़ आस्ट्रेलिया देश का है। इसे (Resin of Botany Bay) बोटानी खाड़ी की राल भी कहते हैं॥

Acetic acid (एसेटिक एसिड)—इसे सिरके का तेज़ाब कहते हैं। सिरके का असल तत्व यही है। सूखे एसिटेट आफ पोटाशियम को गंधक के तेज़ाब के साथ भपके से मामूली आंच में खींचने पर एसेटिक एसिड की कलमें बनाई जाती हैं। इसकी कई उपयोगी खारें बनती हैं। जैसे सफ़ेदा (Sugar of lead) जो सीसा धातु को सिरके में गलाने और ज़ंगार या जंगाल (Acetate of copper or verdigris)। ताम्बे को सिर्के में गलाने से तयार होते हैं। ज़ंगार पानी और अमोनिया में घुल जाता है।

Acetate of Copper (एसीटेट आफ कॉपर)—ज़ंगार Acetic acid देखो।

Acetate of lead (एसिटेट आफ लेड)—सफेदा। इसे Sugar of lead (शूगर आफ लेड) भी कहते हैं। यह सफ़ेद रंग की क़लमें हलके वज़न की होती हैं। मुर्दासंग को सिरके के तेज़ाब में डालने से यह तयार होता है।

Acetylene (एसीटीलीन)—यह एक भारी गेस का नाम है जिस में कोई रंग नहीं होता और दुर्गन्धी आती है। यह गेस खूब तेज़ बलने वाली है। इसकी रोशनी तेज़ [illegible] है। यह काल [illegible] में पाइ जाती है। सन् १८९५ से यह व्यवसाय के लिये बनाई जाने लगी है और अब इसकी बिक्री बहुत है। कारबाइड आफ काल्शियम (Carbide of Calcium) में पानी मिलाने के साथ ही यह गेस पैदा होने लगती है। इसी गेस को असीटीलीन कहते हैं। यह गेस बड़ी भयानक है और यह आंच पाकर झट से भभक उठती है। इसलिये इसे काम में लाती वक्त

बड़ी सावधानी रखनी चाहिये । इस गेस के लम्प बाज़ारों में बहुत मिलते हैं ।

African Copal (अफ्रिकन कोपाल)—Anime देखो ।

Agate (अगेट)—अकीक़, सुलैमानी पत्थर, संगे यशब । यह कम क़ीमती नग है जो खानों से निकलता है । आज काल नकली अकीक भी बहुत बनता है :—१० रतल कवार्ज़ (विलूर), १७ रतल सेंदुर (Red lead), ३.२ रतल पोटाश, २.२ रतल सोहागा और ०.१ रतल संखिया मला कर इसमें क्लोराइड आफ गोल्ड मिलाने से बनता है ।

Agave (अगेव)—यह अमेरिका देश का एक क़िस्म का रामबांस या हाथी चिंघार नाम का पौधा होता है । यह प्रायः हमारे देश में रेल के पटरियों के किनारे लगा हुआ देखा जाता है । इसके पत्तों से रेशे निकाले जाते हैं, जिनसें मज़बूत रस्सियां, रस्से वग़ैरः बटे जाते हैं । इसके पत्तों का रस साबुन बनाने के भी काम में आता है और उससे एक क़िस्म की शराब अमेरिका में तयार होती है ।

Alabaster (अलाबास्टर)—यह एक क़िस्म का चूने का पत्थर है । इसकी तीन क़िस्में हैं (१) एक क़िस्म को (Gypsum) जिपसम कहते हैं, जिसे हिन्दी में कुलबार या फारसी कहते हैं । (२) दूसरी क़िस्म अलाबास्टर है इसके रेज़े (कण) महीन होते हैं । (३) तीसरी किस्म स्वच्छ और पारदर्शक होती है । उसे अंगरेज़ी में सेलेनाइट (Selenite) कहते हैं । अलाबास्टर का रंग सफ़ेद होता है । यह पत्थर मुक़ाम Valterra में जो टस्कनी (Tuscany) देश में है पाया जाता है । यह एक क़िस्म का संगमर्मर ही है और मिश्र देश में मिलता है, इसे Oriental Alabaster कहते हैं । इस से आरायशी चीज़ें, मूर्ति इत्यादि बनाई जाती हैं । इसके बड़े बड़े टुकड़े बहुत कम मिलते हैं ॥

Albumen (अलब्यूमन)—अंडे की सफ़ेदी में यह वस्तु पाई जाती है । ७½ ग्रेन पानी में ७½ ग्रेन पोटाशियम आयोडाइड (Iodide of Potassium) घोल कर अंडे की सफ़ेदी के साथ मथे जब फेन सरीखा हो जाय तब छोड़ दे । निथरने के बाद जो साफ़ चीज़ ऊपर बच रहे उसे अलग कर के बड़े मुंह की बोतल में निकाल ले और ठंडी जगह में रक्खे । यह फ़ोटोग्राफ़ी में काम आता है ।

Acacia (एकाशिया)—कीकर, बबूल इत्यादि जाति के पेड़ों का नाम है, इस की कई जाति हैं। भारतवर्ष में यह कई प्रकार का पाया जाता है। इन पेड़ों में से गोंद या चमड़ा बनाने का कसाव (Tan) निकलता है। जिस के लिए इनकी छाल का बहुत व्यापार होता रहता है। कत्था भी इसी जाति के एक पेड़ में से निकाला जाता है॥

Acaroid Resin (एकरॉयड रेज़िन)—यह एक तरह की राल है जो Xanthorrhea hastilis नामक पेड़ में से निकलती है। यह पेड़ आस्ट्रेलिया देश का है। इसे (Resin of Botany Bay) बोटानी खाड़ी की राल भी कहते हैं॥

Acetic acid (एसेटिक एसिड)—इसे सिरके का तेज़ाब कहते हैं। सिरके का असल तत्व यही है। सूखे एसिटेट आफ पोटाशियम को गंधक के तेज़ाब के साथ भपके से मामूली आंच में खींचने पर एसेटिक एसिड की कलमें बनाई जाती हैं। इसकी कई उपयोगी खारें बनती हैं। जैसे सफेदा (Sugar of lead) जो सीसा धातु को सिरके में गलाने और ज़ंगार वा जंगाल (Acetate of copper or verdigris)। ताम्बे को सिर्के में गलाने से तयार होते हैं। ज़ंगार पानी और अमोनिया में घुल जाता है।

Acetate of Copper (एसीटेट आफ कॉपर)—ज़ंगार Acetic acid देखो।

Acetate of lead (एसिटेट आफ लेड)—सफेदा। इसे Sugar of lead (शूगर आफ लेड) भी कहते हैं। यह सफ़ेद रंग की क़लमें हलके वज़न की होती हैं। मुर्दासंग को सिरके के तेज़ाब में डालने से यह तयार होता है।

Acetylene (एसीटीलीन)—यह एक भारी गेस का नाम है जिस में कोई रंग नहीं होता और दुर्गन्धी आती है। यह गेस खूब तेज़ बलने वाली है। इसकी रोशनी तेज़ [illegible] होती है। यह [illegible] गेस में पाइ जाती है। सन् १८९५ से यह व्यवसाय के लिये बनाई जाने लगी है और अब इसकी बिक्री बहुत है। कारबाइड आफ काल्शियम (Carbide of Calcium) मे पानी मिलाने के साथ ही यह गेस पैदा होने लगती है। इसी गेस को असीटीलीन कहते हैं। यह गेस बड़ी भयानक है और यह आंच पाकर झट से भभक उठती है। इसलिये इसे काम में लाती वक्त

बड़ी सावधानी रखनी चाहिये । इस गेस के लम्प बाज़ारों में बहुत मिलते हैं ।

African Copal (अफ्रिकन कोपाल)—Anime देखो ।

Agate (अगेट)—अक़ीक़, सुलैमानी पत्थर, संगे यशब । यह कम क़ीमती नग है जो खानों से निकलता है । आज काल नकली अकीक भी बहुत बनता है :—१० रतल क्वार्ज़ (बिलूर), १७ रतल सेंदुर (Red lead), ३.२ रतल पोटाश, २.२ रतल सोहागा और ०.१ रतल संखिया मला कर इसमे क्लोराइड आफ गोल्ड मिलाने से बनता है ।

Agave (अगेव)—यह अमेरिका देश का एक क़िस्म का रामबांस या हाथी चिंघार नाम का पौधा होता है । यह प्रायः हमारे देश में रेल के पटरियों के किनारे लगा हुआ देखा जाता है । इसके पत्तों से रेशे निकाले जाते हैं, जिनसें मज़बूत रस्सियां, रस्से वग़ैरः बटे जाते हैं । इसके पत्तों का रस साबुन बनाने के भी काम में आता है और उससे एक क़िस्म की शराब अमेरिका में तयार होती है ।

Alabaster (अलाबास्टर)—यह एक क़िस्म का चूने का पत्थर है । इसकी तीन क़िस्में हैं (१) एक क़िस्म को (Gypsum) जिपसम कहते हैं, जिसे हिन्दी में कुलबार या कारसी कहते हैं। (२) दूसरी क़िस्म अलाबास्टर है इसके रेज़े (कण) महीन होते हैं। (३) तीसरी किस्म स्वच्छ और पारदर्शक होती है। उसे अंगरेज़ी में सेलेनाइट (Selenite) कहते हैं। अलाबास्टर का रंग सफ़ेद होता है । यह पत्थर मुक़ाम Valterra में जो टस्कनी (Tuscany) देश में है पाया जाता है। यह एक क़िस्म का संगमर्मर ही है और मिश्र देश में मिलता है, इसे Oriental Alabaster कहते हैं। इस से आरायशी चीज़ें, मूर्ति इत्यादि बनाई जाती हैं। इसके बड़े बड़े टुकड़े बहुत कम मिलते हैं॥

Albumen (अलब्यूमन)—अंडे की सफ़ेदी में यह वस्तु पाई जाती है। ७½ ग्रेन पानी में ७½ ग्रेन पोटाशियम आयोडाइड (Iodide of Potassium) घोल कर अंडे की सफ़ेदी के साथ मथे जब फेन सरीखा हो जाय तब छोड़ दे। निथरने के बाद जो साफ़ चीज़ ऊपर बच रहे उसे अलग कर के बड़े मुंह की बोतल में निकाल ले और ठंडी जगह में रक्खे । यह फ़ोटोग्राफ़ी में काम आता है।

Alcohal (अलकोहल)—मद्यसार, अलकोहल, स्पिरिट Spirit। यह बिना किसी रंग का, तलख़ और स्वाद में जलन पैदा करने वाला अर्क़ है। मद्य या शराब या जितने खमीरवाले अरक़ हैं उन सब का यह सार है और इसी में नशा होता है। यह कई पेड़ों में पाया जाता है और उन में से निकाला भी जाता है, पर खास कर के शक्कर या स्टार्च (माड़ी) से तयार किया जाता है। यदि यह चीज़ बहुत सी पानी में घोल दी जाय और उस में खमीर या शराब की फेन मिला दी जाय तो अंगूरी शक्कर बन कर अलकोहल अथवा कार्बोनिक एसिड बनता है। पानी से इसे अलग करना बहुत ही कठिन है। बिलकुल खालिस अलकोहल (Rectified) में भी ९ या १० फी सदी जल रहता है। बिलकुल खालिस अलकोहल बनाने में चूना और मेटालिक सोडियम (Metallic Sodium) का योग देना पड़ता है।

खालिस अलकोहल खूब बलता है और इसकी ज्वाला कुछ नीले रंग की होती है जिस में रोशनी बहुत कम होती है। सरदी पाकर यह जल्दी जमता नहीं इस लिये इस में फिर भी लाल रंग मिला कर इसकी थरमामेटर भी बनाया जाता है—जहां बहुत सरदी से पारे वाला थरमामेटर का पारा जम जाता है वहां यही काम देता है। हुनर के काम में इसका इस्तेमाल बहुत है। राल या चरबी घोलने या वारनिश बनाने में यह बहुत ज्यादा काम आता है। सामान्य हुनर के कामों और जलाने के लिये लकड़ी का मद्यसार (Wood Naphtha, Methylated Spirit) ही काम में लाया जाता है। इसको जलाने से कड़ी आंच पैदा होता है और यह पीने के काम में नहीं आता, ज़हरीला होता है।

शुद्ध स्पिरिट में, जो आम तौर से प्रूफ-स्प्रिट (Proof spirit) कहलाता है, मद्यसार और पानी ४९·५ व ५०·५ फी सदी के हिसाब से रहता है। मतलब यह है कि यदि सौ में ४९½ भाग शुद्ध स्पिरिट है तो उसमें ५०½ भाग पानी मिला है। जब इस हिसाब से वह ज्यादा तेज़ होता है तो उसे उसके तेज़ी के मुताबिक़ उतनाही ओवर-प्रूफ (O. P.) और जितना कम तेज़ होता है उतनाही अंडर-प्रूफ (U. P.) कहते हैं। प्रूफ़-स्पिरिट केवल दवा के काम आता है।

[सन् १९०७-८ में ११०४४०००) का और सन् १९०९-१० में ११०३००००) का स्पिरिट बिदेशों से आया। यह ऐसी कारामद चीज़ है जिसकी खपत

हिन्दुस्तान में १ करोड़ रुपये से ज्यादा की होती है। यह ज्यादातर बिदेशों से आती है और इस देश में इसे कोई नहीं बनाता]।

Alfa (अलफा)—हलफा घास। इसे अंग्रेजी में एस्पारटो (Esparto) भी कहते हैं। इसका काग़ज़ बहुत बनता है इसी से इसकी बहुत क़दर की जाती हैं। यह घास अलजीयर (Algiers), टूनिस (Tunis) और स्पेन देश में बहुत होती है।

Alizarine (अलिज़रीन)—मजीठ का सत। मजीठ का यह वह सत है जिससे लाल रंग बनाया जाता है। अब यह एक पदार्थ से, जिसे अंथ्रासीन (Anthracene) कहते हैं और जो कोलटार (Coal tar) याने अल्कतरा से कशीद किया जाता है, बहुत बनाया जाता है। योरप में ३० साल से इसके रंग तयार करने का कारोबार इतना उन्नति कर गया है कि अब मजीठ की क़दर बहुत ही कम हो गई है। [यह चीज़ जरमनी में ही तयार होती है मानों इस कारोबार पर उसी का ठीका होगया है। हर साल ७५ लाख रुपये का अलीज़रीन जरमनी से इङ्गलैंड जाता है।

[अलीज़रीन और अनीलीन रंग हिन्दुस्तान में हर साल ८० लाख रुपये से ज्यादे के आते हैं जैसा कि नीचे लिखे ब्योरे से मालूम होता हैं:—सन् १९०७-८ में ८४,६५,०००) के, सन् १९०८-९ में ८०,४८,०००) के, सन् १९०९-१० में १७,१९,०००) के रंग इस देश में आये]।

Alkali (अलकली)—खार, क्षार। कई तरह के क्षार वाले पेड़ पत्ती वग़ैरः से जला कर यह तयार होती है। खनिज वस्तु से भी बनाई जाती है जैसे चूना वग़ैरः।

Alkaline earths (अलकलाइन अर्थ)—खनिज खार, क्षार मिट्टी, जैसे चूना, बरीटा (Baryta), स्ट्रांशिया (Strontia)।

Alkanet (अलकानेट)—रतनजोत। यह एक क़िस्म के पेड़ की जड़ है। इस पेड़ को Anchusa tinctoria कहते हैं और यह दखनी योरोप व लेवांट (Southern Europe and Levant) में बहुत होता है। इस की जड़ से बहुत सुन्दर गहरा गुलाबीग रंग निकलता है जो तेल, तारपीन और स्पिरिट में

घुल जाता है। गंधी लोग सुगंधित तेल, साबून, इत्यादि को इस से मिलाकर रंगीन बनाते हैं और बारनिशों में भी मिलाया जाता है। ग्रेट बृटन से यह हर साल लग भग १५ टन बाहर भेजा जाता है।

Alloys (अलॉयज)—मिश्रित धातु, मिलवां धातु। दो तीन क़िस्म के धातों के मेल से जो धातु बनें उसे अँग्रेजी में अलॉय कहते हैं और हिन्दी में मिलवां धातु कहते हैं। पीतल, कांसा इत्यादि मिलवां धात हैं। खूब तेज़ आंच में यह सब धातु गला कर मिलाये जाते हैं। पारा, जो एक प्रकार का शुद्ध धातु है, ठंडा ही दूसरी धातु के साथ मिल जाता है—पारे और किसी दूसरी धातु के मेल को अँग्रेज़ी में अमलगम् (Amalgam) कहते हैं। पारे को सोने, जस्ते अथवा रांगे से मिला कर अमलगम् तयार करते हैं। कई धातु मिलने पर उस में एक नया गुण पैदा हो जाता है, मिलाये हुये धातुओं के गुण कम रह जाते हैं। जैसे ख़ालिस सोना या चांदी दोनों बड़ी नरम धातु हैं पर जब इनमें ज़रा सा ताम्बा मिला दिया जाता है तो वह कड़े हो जाते हैं और उनके रंग भी कुछ बदल जाते हैं। बाज़ारों में जो ख़ास ख़ास मिली धातें मिलती हैं उनके नाम और उनमें मिलाई हुई धातुओं के नाम और वज़न नीचे दिये जाते हैं।

ब्रॉंज़ (Bronze) कसकुट	ताम्बा	९५ + रांगा ५ भाग
गन्‌मेटल (Gun Metal)	"	९० + " १० "
बेल मेटल (Bell Metal) फूल	"	७८ + " २२ "
स्पेक्युलम् मेटल (Speculum Metal) ...	"	६६ + " ३४ "
पीतल (Brass)	"	६४ + जस्ता ३६ "
अलूमीनियम ब्रॉंज (Aluminium Bronze)	"	९० + अलू० १० "
जरमन सिलवर (German Silver) ...	"	५१ + जस्ता ३०·६ " + निकल १८·४ "
कांसा (Pewter)	रांगा	८० + सीसा २० "
टाइप मेटल (Type Metal)	"	२५ + " ५० " Antimony २५

ब्रिटानियां मेटल को पीतल, रांगा, सुरमा और बिसमथ (Bismuth) सम्‌भाग मिलकर बनाते हैं।

Allspice (आलस्पाइस)—एक क़िस्म का खुशबूदार खाने का मसाला या फल, इसे पीमेन्टो (Pimento) भी कहते हैं। यह जमैका देश में बहुत होता है और वहीं से ज्यादः चलान होता है। खानों में ऐसा लगता है जैसे लौंग, दारचीनी और जायफल मिला चूर्ण हो। हज़ारों टन हर साल चलान होता है।

Almond (आलमंड)—बादाम। बादाम मीठा और कडुआ दो किस्म का होता है इसकी असल जाती कड़ुवी है। इसकी लकड़ी सुर्ख़ रंग की और सख्त होती है और इसकी बहुत क़दर की जाती है। बादाम का गूदा ही ज्यादः काम आता है। मीठा बादाम भी तीन क़िस्म का होता है—दो को तो सभी लोग जानते हैं जैसे कागज़ी और कठिया इसमें से दो प्रकार का तेल भी बहुत निकाला जाता है। कड़ुआ बादाम कुछ ज़हरीला होता है क्योंकि इस में प्रूसिक एसिड का सा विष है। इसके दो प्रकार के तेल होते हैं जिनकी वर्णन नीचे दिया जाता है।

Almond, Fixed oil (अलमंड फ़िक्स्ड आयल)—ख़ालिस बादाम का तेल। मीठे या कडुए बादाम को दबा कर यह तेल निकाला जाता है। पहिले तो यह तेल दुधिया रंग का होता है पर थोड़ी ही देर बाद ज़र्द रंग का हो जाता है और अगर हवा में खुला रक्खा रहे तो उस में खटास भी जल्द आ जाता है और कड़ुआ होकर महकने लगता है। इस तेल में ग्लीसरीन और ओलिक एसिड या ट्रिओलीन (Oleic acid, triolene) का अंश रहता है।

Almond, Essential or Volatile Oil (अलमंड, ईसेंशल या वोलेटाइल आईल)—कडुवे बादाम में से दबाकर या पेर कर तेल निकाल लेने पर जो खली रह जाती है उसे पानी में भिगा देते हैं। फिर कशीद करके उसका तेल निकालते हैं। जो तेल इस रीति से निकाला जाता है वही यह तेल है। इस तेल में कई द्रव्यों का अंश रहता है। विशेष करके हाइड्रोसायनिक एसिड और बेंज़ोइक एसिड (Hydro-cyanic acid and benzoic acid)। बाज़ार में यह तेल मिलता है इसका रंग सुनहरा ज़र्द होता है। यह साबुन में सुगन्धी के लिये दिया जाता

है और कभी कभी स्वाद के लिये खाने की चीज़ों में भी ज़रा ज़रा मिलाया जाता है। जो तेल खाने के काम में भी लाया जाता है वह साफ किया हुआ होता है उसमें का प्रूसिक एसिड जो एक प्रकार का ज़हर है निकाला हुआ होता है यह तेल खाने में कड़ुआ और ज़हरीला होता है।

Aloe (एलो)—बांस केवड़ा, हाथी चिंघाड़। इसके पत्तों के रेशे सन से भी ज्यादा मज़बूत होते हैं। यह कई ज़ाति का होता है। बम्बई प्रान्त में इसकी काश्त फ़ायदे के साथ होती है। हर सूबों में कुछ न कुछ पैदा होने लगा है। १० जून सन् १८९९ में इङ्गलिशमेन पत्र ने डाक्टर मूंटर की कोशिश का हाल इसके बोने के बाबत छापा था। उक्त डाक्टर ने ३,००० एकड़ में इसे बोना शुरू किया फिर २०,००० एकड़ ज़मीन और भी लिया और इसकी फ़ेक्टरी क़ायम की।

Aloes (एलोज)—मुसब्बर, घीआकुंआर (एलुआ)। मुसब्बर से क़ीमती दवा बनती है। मुसब्बर के सत्त को अँग्रेज़ी में aloin कहते हैं। यह पौधा भी कई जाति का होता है। हिन्दुस्तान में प्रायः तीन तरह का पाया जाता है। घियाकुँआर के दूध या रस से मुसब्बर बनता है यह दवा बहुत काम आती है। बम्बई में लगभग १,४४० मन मालियती २०,०००) का बना हुआ मुसब्बर विदेश से आता है और इतना ही यहां से कच्चा मुसब्बर बाहर जाता रहता है।

Aloes wood (एलोज़ उड)—अगर की लकड़ी। इसे अँग्रेज़ी में Eagle wood or Calambac भी कहते हैं। Eagle wood देखो।

Aloin (अलोईन)—मुसब्बर का सत्त।

Alpaca (अलपाका)—अलपाका। दक्खनी अमेरिका और विशेष करके पेरू में अलपाका नामी पशु भेंड़ की तरह का होता है उसी के ऊन से बने हुये कपड़े को अलपाका कहते हैं। यह ऊन लांबे, रेशमी चमक वाले और मुलायम होते हैं। एक पशू से ५ या ६ सेर ऊन उतरता है। अलपाका के कपड़ों से छाते के खोल, शाल इत्यादि बनते हैं। लगभग २० लाख रतल अलपाके का ऊन इंगलेंड में जाता है। अलपाका के

दूसरे जाती की भेड़ें विकूना (Vicuna) और गुआनेको (Guanaco) कहलाती हैं। इनके ऊन काले भूरे और बादामी रंगके होते हैं। अलपाका की चीज़ें खास करके ब्राडफोर्ड (Bradford) और सालटैयर (Saltair) में बनती हैं। प्रायः इस ऊन के कपड़े गर्भ-सूती होते हैं। बाना सूती और ताना ऊनी होता है।

Alum (एलम)-फिटकिरी। सलफ़ेट आफ़ पोटाश और सलफ़ेट आफ़ अलूमिना और पानी के अंश से मिलकर फिटकिरी बनती है। इसका स्वाद कुछ मिठास लिए हुए कसैला होता है। इसका रंग कुछ स्वच्छ और इसके डले पहलदार होते हैं। कपड़े रंगने के लिए यह बड़े कामकी चीज़ है। इसमें जो अलूमिना का अंश रहता है उसका यह विशेष गुण है कि वह सूत के रेशे में समा जाता है और रंग को अपने में सोख लेता है इसलिए कपड़े में इसका ज़ामिन या अस्तर देने से सूत या कपड़े पर रंग खूब चढ़ जाता है। फिटकिरी से एक क़िस्म का रंग भी तयार किया जाता है, जिसे अंग्रेज़ी में लेक कलर (Lake colour) कहते हैं।

Alum white (एलम ह्वाइट) याने फिटकिरिया रौग़न—इसे इस तरह तयार करते हैं कि १ सेर पिसी हुई साफ़ फिटकरी को ½ सेर शहद में मिलाकर सुखावे फिर पीसकर छिछले तवे पर फैलाकर भूने जब सफ़ेद हो जाय तब ठंडा होने पर धो डाला जाय और सुखाकर काम में लावे। यह उमदा और पक्का सफ़ेद रौग़न होता है जो तेल या पानी दोनों के साथ इस्तेमाल हो सकता है। ढाल गेहूं के आटे में इसे थोड़ा मिलाकर जो रोटी बनाई जाती है वह खूब सफ़ेद होती है।

फिटकरी बहुत ज्यादा ग्लासगो के पास ह्विटवी में मिलती है। हिन्दुस्तान में फिटकरी अधिक करके सिन्धु नदी के किनारे कालाबाग में और चिंचली पहाड़ के करीब कोटकिल में मिलती है और हर साल यहां ४०० टन अर्थात २६० मन तयार होती है। हिन्दुस्तान की फिटकिरी उतनी साफ़ नहीं होती जितनी कि विदेश की आई हुई होती है। क्योंकि यहां की फिटकिरी में मैल ज्यादा रहती है।

हिन्दुस्तान में यह बाहर से बहुत आती है १९०६-७ में ७२३४४ हंडरवेट मालियती ३१९४०७) की फिटकरी बाहर से आई।

Alumina (अलूमिना)—अलूमिना। यह एक धातु का भस्म है जो चिकनी

मट्टी में कई तरह का पाया जाता है जिससे अलूमिनियम तयार होता है। जिस जिस रूप में यह मिलता है उनका नाम यह है—

(२) आकसाइड आफ अलूमिनियम (Oxide of aluminium) बहुत मिलता है। यही जब शुद्ध अवस्था में रहता है तो यह 'कुरण्ड' या कुरुन पत्थर (Corundum) कहलाता है। यही कोरण्ड रंगीन द्रव्यों से मिलकर मानिक या नीलम या पुखराज बन जाता है। जब इसमें मट्टी वग़ैरा का मेल रहता है तब इसे 'मानिकरेत' (emery=एमरी) कहते हैं और जब इसमें जल तत्व भी अधिक रहे तब यह अंग्रेज़ी में डायस्पोर (diaspore) कहलाता है। सूत रंगने में इसका बहुत काम पड़ता है। इसका ज़ामिन दे देने से रंग रेशों में समा जाता है और इसी से पक्का होता है।

(२) सिलिकेट आफ अलूमिना (Silicate of alumina)-कादा या चिकनी मट्टी इसी से बनती है और कई क़िस्म के पत्थर भी इसके होते हैं, इनमें फेलस्पार (Felspar) अधिक मिला पाया जाता है।

Aluminium (अलमिनियम)—यह एक प्रकार का स्वेत हलका धातु है। चिकनी मट्टी, फेलस्पार (felspar), स्लेट, और कई पत्थरों में जैसे कोरण्ड, डायस्पोर (diaspore) इत्यादि और कियोलाइट (cyolite) में पाया जाता है। अलूमिनियम अधिकतर एक प्रकार की मट्टी में जिसे बाक्साइट (Bauxite) कहते हैं, मिलता है। यह धातु बहुतही ज्यादा हलका होता है, जल से केवल २½ गुना भारी है और पालिश करने पर ख़ूब चमक उठता है। यह कई धातुओं के साथ मिलाया जा सकता है परन्तु पारे के साथ इसका मेल नहीं होता। यह धातु ढाला जाता है और इस की चीज़ें मज़बूत पर बड़ी ही हलकी बनती हैं—इस के बरतन सभी लोगों ने देखें होंगे, अब इनका रवाज हिन्दुस्तान में बहुत फैल रहा है। इसकी चद्दरें नाव, जहाज़ आदि के पेंदे पर लगाने में भी काम आती हैं और यह धातु सस्ती भी मिलती है। अलमिनियम-ब्रोंज में इसी का मेल ताम्बे के साथ दिया रहता है। अब यह हिन्दुस्तान के दक्खिन भाग में बनाया जाने लगा है। इसका बड़ा कारोबार मद्रास में होता है। इस कम्पनी का नाम 'इंडियन अलूमिनियम कम्पनी', है।

सन १९०८-९ में १९१०००) का २२७५ हंड० और सन १९०९-१० में ३४६०००) का ४४७७ हंडरवेट अलूमिनियम खास करके मद्रास प्रेसिडेंसी में आया।

Amalgam (अमालगम)—अमालगम। पारा जब सीसा वा जस्ता व विस्मथ वा रांगा वा चांदी अथवा सोने के साथ मिलाया जाता है तो उसे अमलगम कहते हैं। पारा इन धातुओं के साथ सहज ही मिल जाता है किन्तु ताम्बे से कम मिलता है पर लोहा, कोबाल्ट, अलूमिनम और प्लाटिनम के साथ तो ज़रा भी नहीं मिलता। पारे के इस गुण से कि वह किसी किसी धातु के साथ तो मिल जाता है और किसी के साथ नहीं मिलता बड़ा काम निकलता है अर्थात् एक धातु को दूसरे से अलग करने का काम इस से लिया जाता है। सोना और चांदी को दूसरे धातु वा मैल से अलग करने में यह बहुत काम देता है। सोने की रेत को मट्टी वा रेत और दूसरी धातुओं से जब अलग करना होता है तो पारा उस मट्टी में जिसमें सोने का रेत हो ख़ूब मिला देते हैं, जितना सोना होता है सब पारे से मिल जाता है, तब पारे को भभके में उतार कर सोना अलग कर लेते हैं, बाक़ी चीज़ों से पारा नहीं मिलता वह सोने से अलग रह जाती हैं। रांगे और पारे के मेल से आईनों पर क़लई की जाती है।

Ambari Hemp (अम्बारी हैम्प)—अम्बारी पटुआ। Deccan Hemp देखो।

Amber (अम्बर)—कहरुबा। यह एक क़िस्म की ज़र्द रंग की प्राचीन समय के पेड़ों से निकली हुई राल होती है जो पहाड़ों में पाई जाती है और बहुत कड़ी और तड़क-जाने-वाली होती है, खास करके प्रशिया में बहुत मिलती है। यह ईथर में घुल जाती है। इस का रंग ज़र्द या भूरा होता है। यह पारदर्शक भी मिलती है और जिस में मैल रहती है वह कुछ कम स्वच्छ होती है। इस के मनके, मुंहनाल, बटन इत्यादि बनाए जाते हैं। इसे ऊनके साथ रगड़ने से इस में बिजली पैदा होती है और छोटे तिनकों को दूर से खींच कर उठालेती है। इसी से इसको फ़ारसी में 'कहरुबा' कहते हैं—इसकी वारनिश बड़ी उत्तम बनती है। यह थोड़ी बहुत सब देशों में मिलती है पर

बाल्टिक समुद्र के किनारे यह ज्यादा पाई जाती है। बर्म्हा देश में हुकांग पहाड़ से निकलती है। बर्म्हा से लगभग ५०००) साल की निकाली जाती है। इसकी सालाना निकास कुल दुनियां में लगभग १०५००००) की कूती गई है।

Ambergris (अम्बरग्रीस)—फ़ारसी में इसे अम्बर कहते हैं। यह मशहूर सुगंधित द्रव्य है। यह भूरे रंग की फेनदार चरबी की चीज़ है जो ग्रीनलैंड, चीन, जापान, वेस्ट इंडीज़ और ब्राज़ील के समुद्र में तैरती हुई मिलती है। कहा जाता है कि एक क़िस्म की व्हेल मछली के शरीर से यह निकलती है। इसकी सुगंधी बड़ी मीठी और रोचक होती है। यह बड़ी क़ीमती चीज़ है और इसका भाव लगभग १२) से ३६) तोला तक रहता है। Bottle-nosed whale के पेट में से या कभी कभी पानी में तैरता हुवा अम्बर मिलता है। इसे गरम गरम अल-कोहल में मिला कर इसमें से अम्बरीन (Amberin) नामक सत्त निकाला जाता है जो पानी में नहीं घुलता अलबता ईथर व अलकोहल में घुलता है।

Amberite (अम्बराइट)–बेधूंए की बारूद। यह गनकाटन, बेरियम नाइट्रेट और सूखा पाराफ़िन मिलाने से बनती है।

Amboyna Wood (अम्बोयना वुड)—इस देश की एक सुन्दर दाग़-दार लकड़ी है।

American Cloth (अमेरिकन क्लाथ)—Leather cloth देखो।

Amethyst (अमेथिस्ट)—नीलवर्ण, गोधूम। यह एक प्रकार का रंगीन बिल्लौर या स्फटिक पत्थर है। इसका रंग बैंगनी नीला होता है और अंगूठियों में नग जड़ने या मोहर बनाने के काम आता है। यह बहुत मिलता है इसलिए सस्ता होता है। सब से उत्तम जाति का यह नग हिन्दुस्तान, सिलोन और ब्राज़ील में पाया जाता है। उस नीलम को जिसकी आभा कुछ बैंजनी होती है उसको भी अंग्रेज़ी में ओरियेंटल अमेथिस्ट (Oriental amethyst) कहते हैं।

Amianthus (अमियंथस)—Asbestos देखो।

Ammonia (अमोनिया)—इसे नौसादर का सत्त कहना चाहिये। यह एक क़िस्म की गेस है जो नाइट्रोजन और हाइड्रोजन से मिल कर बनी है। यह हवा से बहुत ज्यादः हलकी होती है और इस के सूंघने से दम घुटता है। नौसादर और चूना मिलाने से यह गेस निकलती है। यह गेस पानी में अच्छी तरह मिल जाती है, तब इसे लाइकर अमोनिया कहते हैं। दवा और रासायनिक कामों में इस का बहुत प्रयोग किया जाता है। इसके कई क्षार बनाये जाते हैं जो कई व्यवसाई और हुनर के काम में लाये जाते हैं—जैसे (१) सलफेट आफ अमोनिया जो खाद के काम आती है, (२) कारबोनेट आफ अमोनिया यह सूँघने के काम की दवा है, इसे साल वोलेटाइल (Sal volatile) भी कहते हैं, (३) नाइट्रेट आफ अमोनिया जिस से लाफ़िंग गेस बनती है। यह गेस प्रायः बरसाती पानी, सोते का पानी, समुद्र के जल में, ज्वालामुखी पहाड़ के पास, कई क़िस्म के पेड़ में और जहां पेड़, पत्तियां वग़ैरः सड़ती हैं वहां वायू में मिली पाई जाती है (इस गेस से हलदी का रंगा कागज़ भूरा या लाल रंग का हो जाता है)।

Ammoniacum (अमोनिएकम)—यह एक प्रकार की गोंद है जो फ़ारस के एक पेड़ से निकलती है।

Amygdaline (अमीगडलीन)—कड़ुये बादाम का सत्त। कड़ुआ बादाम का तेल निकाल लेने के बाद उसकी खली गरम गरम अलकोहल में मिलाने पर यह सत्त निकलता है।

Anatto (अनेटो)—Annatto देखो।

Anethol (एनीथोल)—Fennel देखो।

Angora (अंगोरा)—यह एक जाति की भेड़ है जो एशिया-माइनर के अंगोरा देश में होती है। इसी की एक क़िस्म 'मोहैर' (Mohair) भेड़ है। इस के रेशमी, घुंघराले पश्म बहुत उत्तम होते हैं। इसके ऊनकी शाल उत्तम बनती है।

Aniline (अनिलाइन)—अनिलीन। इस नाम का एक पदार्थ कोलटार (अलकत्रा) जैसा तेल से निकलता है जिसका कोई रंग तो नहीं होता

पर हवा लगते ही उसमें स्याही आ जाती है और यह बहुत तेज़ महकता है—पानी में तो जल्दी नहीं घुलता पर अलकोहल या ईथर में जल्दी घुल जाता है। यह बड़ी ज़हरीली चीज़ होती है इस लिये बड़ी सावधानी के साथ इसे काम में लाना पड़ता है। कोलटार को कशीद करने से बेनज़िन (Benzene) निकलता है। इस में तेज़ शोरे के तेज़ाब का योग देने से नाइट्रो बेनजिन [Nitro benzene) तयार होता है, यह जब असेटिक एसिड और लोह-चून से मिलाया जाता है तब असिटेट आफ अनीलीन बनता है। बेनज़ीन और अमोनिया मिला कर गरम गरम नलके में डालकर निकालने से भी अनीलीन तयार हो जाता है।

इसी अनीलीन में क्लोराइड आफ लाइम मिलाने से सुन्दर बैजनी रंग बन जाता है। इस से और भी कई रंग बनते हैं। यह रंग बिना ज़ामिन दिए हुए ही रेशम और ऊन पर सहज में पक्का चढ़ जाता है अलबत्ता सूत और रेशे रंगने में विशेष बिधान करना पड़ता है। लग भग ५० या ६० साल से यह रंग चला है और जब से चला है तब से प्रचीन रंग मारे गए। लगभग ३० वर्ष से तो इसके रंगों का इस्तेमाल बेहद बढ़ गया है। इसके रंग जरमनी में बहुत करके तयार होते हैं।

अनीलीन और अलीज़रीन रंग के लगभग ८० लाख रुपये से ज्यादा के हिन्दुस्तान में हर साल आते हैं।

Anime (अनीमें)—यह एक प्रकार की राल है इसे अफरिकन कोपाल (African Copal) भी कहते हैं। यह ज़ंजीबार देश से बहुत आती है। इसका रंग पीला, स्वच्छ होता है और इसकी सुगंधी मनोहर होती है। वारनिश बनाने में यह बहुत काम आती है।

Anise Camphor (एनिस क्यम्फ़र) - Fennel देखो।

Aniseed (एनीसीड)—सौंफ, अनीसूं, बादियान। यह रूस और जपान में बहुत पैदा होती है। सब से उत्तम सौंफ़ स्पेन देश के अलीकांट (Alicante) मुक़ाम से आती हैं। जापान और चीन में इसकी बहुत क़दर है। सौंफ़ की एक और क़िस्म चीन और सिंघापुर से आती है।

Annatto, Annotto (अनाटो, अनोटो)—लटकन का फूल । इसे Annotto, Roucou or Orleana भी कहते हैं, यह सब तिजारती नाम हैं, इस लिये लिखे गये । हिन्दी में यह लटकन का फूल कहलाता है । इस का सूक्रियाना गेरुआ रंग सुन्दर होता है । दूध, मक्खन इत्यादि में इसका रंग बहुत दिया जाता है । इस में कोई स्वाद नहीं है और खाने में किसी प्रकार की हानी नहीं करता इसलिये केसरिया रंग लाने के लिये मिठाई इत्यादि के काम में भली भांति लाया जा सकता है । वारनिश में थोड़ा मिला कर रंग चमकीला कर लिया जाता है (Arnnoto) भी इसका नाम है ।

Anthracene (एन्थरासीन)—कोलाटार से यह कशीद किया जाता है । व्यापार में यह बड़े काम की और क़ीमती चीज़ है क्योंकि इसी से अलीज़रीन तयार होता है । अलीज़रीन से कई रंग बनाये जाते हैं ।

Anthracite (एन्थरासाइट)—यह एक क़िस्म का पत्थर का कोयला होता है । देखने में इस में चमक रहती है और यह बड़ा कड़ा और घन होता है और भट्टे में ख़ूब जलता है और धूआं कम देता है । इसी कारण से इंजिनों में बहुत जलाया जाता है । यह कोयला सौथ वेल्ज़ में मिलता है और पेनसिलवेनिया (Pennsylvania) में यह बहुत निकलता है ।

Antimony (एण्टीमनी)—यह सफ़ेद रंग का नीली झलकवाला एक धातु है । जिस खनिज द्रव्य में से यह निकाला जाता है उसे (Stibite or Sulphide of antimony) सुरमा कहते हैं । जरमनी, हंगरी फ्रांस, अमेरिका, ग्रेट बृटन और बोरनियो में मिलता है । यह धातु बहुत जल्द चूर चूर हो जाता है । नर्म धातुओं के साथ इसे मिलाने पर वह धातु कड़ी हो जाती हैं । टाइप-मेटल और ब्रेटानिया मेटल में इस का योग होता है । अन्टीमनी स्वयम बड़ी तुनुक-भंज है । इसके और गंधक के संयोग से सुरमा बनता है ।

Antimony sulphide (एण्टीमनी सलफ़ाइड)—Antimony देखो ।

Antlers (एण्टलर्ज़)—बारहसिंघा या हरिन की सींग । यह हड्डी या हाथी दांत की

नाई मज़बूत होती है। इसकी बहुत सी नफ़ीस नफ़ीस चीज़ें बनाते हैं जैसे चाक़ू के दस्ते, मूठ इत्यादि।

Apatite (अपेटाइट)—यह एक खनिज वस्तु खाद के काम में आती है। नारवे और कनाडा से आती है। इसका खाद बड़ा अच्छा होता है।

Apple (एप्ल)—सेब। इस फल के पेड़ २००० प्रकार के होते हैं और इसका बड़ा व्यापार है। इसका रस निकाला जाता है जिसे साइडर कहते हैं। सेब में एक प्रकार का तेज़ाब रहता है जिसे म्यालिक एसिड (Mâlic Acid) कहते हैं और इसी के कारण से सेब का सिर्का और उसकी शराब बनती है। योरोप और अमेरिका में यह बहुत होता है। हिन्दुस्तान में ख़ास कर के पच्छिमी हिमालय, काश्मीर, अफ़ग़ानिस्तान और पंजाब, सिन्ध, संयुक्तप्रांत, मध्य हिन्दुस्तान और दक्खिन में इसकी बहुत काश्त होती है।

इसकी लकड़ी जिसे 'अल्मा' कहते हैं सख़्त, मज़बूत, देरपा व चिकनी होती है और इसकी छाल से एक प्रकार का ज़र्द रंग निकलता है।

Apricot (अपरीकाट)—ख़ूबानी, जर्दालू, क़ुरमालू। यह मशहूर मेवा है और चार जाति का होता है। हिन्दुस्तान में यह अफ़ग़ानिस्तान से आता है। इसके बीए का तेल निकलता है और कडुए बादाम के तेल के नाम से बिकता है। इसके मग़ज़ से प्रूसिक एसिड (Prussic acid) निकाली जाती है। इस पेड़ में एक क़िस्म की गोंद कतीरे की तरह की होती है जिसे 'चेरिगम' (cherry gum) कहते हैं। इसके मग़ज़ से कशीद करके फ्रांसीसी लोग यू डी नोयो (eau de noyaua) तयार करते हैं।

Aqua Fortis (ऐकवा फ़ोरटिस)—हलका शोरे का तेजाब। शोरे के तेज़ाब में पानी मिलाकर हलका कर लेने पर अकवा फ़ोरटिस कहलाता है। इसमें कई धातू चांदी, ताम्बा, जस्ता इत्यादि गल जाते हैं।

Aquamarine (अकवामेराईन)—यह एक क़िस्म का कम क़ीमती जवाहिर या संग है। इसका रंग लीला सब्ज़ी मायल होता है। कभी कभी 'बेरिल' (beryl) को भी कहते हैं। सब से अच्छा संग सिलोन में मिलता है और ब्राज़ील व साइबीरिया में भी पाया जाता है।

Aqua Regia (एकवा रिजिया)—१ हिस्सा शोरा का तेज़ाब (Nitric acid) और २ हिस्सा नमक का तेज़ाब (Hydrochloric acid) मिलाने से एकवा रेजिया तयार होता है। केवल इसी मिले हुए तेज़ाब में सोना और प्लाटिनम धातु गलते हैं। इसलिये इसे शाही तेज़ाब कहें तो क्या बेजा है।

[१] शोरे का तेज़ाब और म्यूरिएटिक एसिड वा हाईडरोक्लोरिक एसिड सम् भाग [२] अथवा शोरे का तेज़ाब २ भाग और नमक का तेज़ाब (म्यूरिएटिक एसिड) १ भाग मिलाले। [३] किंवां ६ रतल सफ़ेद शोरा, १½ रतल तेज़ाब गंधक और १½ पैंट पानी का अर्क़ उतारने से स्पिरिट आफ़ नाइटर (Spirits of nitre) तयार होता है। इसमें चौथाई भाग नमक मिलाकर इसका अर्क़ भी एक्वारिजिया है।

Arabin (अरबिन्)—कीकर वा बबूल की गोंद को पानी में घोलकर अगर उसमें अलकोहल मिलाया जाय तो सफ़ेद सफ़ेद गाद नीचे बैठ जाती है इसी को अरबिन कहते हैं।

Archill (अरचिल)—यह एक क़िस्म का सुरख़ी मायल बैंजनी वा आसमानी रंग है, जो एक प्रकार की काई से, जो पेड़ों पर व पहाड़ों पर पैदा होती है, बनता है। यह रेशम रंगने के काम आता है। इसे ऑरसील (orseille) भी कहते हैं।

Areca (अरीका) सुपारी, सोपाड़ी, पूँगीफल। इसकी दो क़िस्म हैं। हिन्दुस्तान में यह पान में खाई जाती है और योरोप में यह दांत का मंजन बनाने के काम में आती है। सुपारी उबालकर चिकनी सुपारी बनती है। इसे Betelnuts भी कहते हैं। यह हर साल औसतन ८४ लाख रूपये की टापुओं से आती है।

Argentoid (अरजेनटाइड)—जरमन सिलवर की तरह यह भी कई धातुओं के मेल से जरमन सिलवर की नकल बनी है। अभी इसका ज्यादा इस्तेमाल नहीं हुवा है।

Argil (आरगिल)—शराब के घड़े या पीपे में एक क़िस्म की श्वेत या लाल रंग की गाद दानेदार ढुर्रे की तरह जम जाती है। यह बाइटारटरेट आफ़ पोटाश (bitartrate of Potash) है। यह पोर्चुगल से बहुत आती है और स्याह रंग रंगने के काम आती है। इसी से टारटरिक एसिड (Tartaric acid) और क्रीम आफ टारटार (Cream of tartar) तयार होता है।

Arnotto (आरनोटो)—Annotto देखो

Aromatic vinegar (अरोमेटिक विनेगर)—तेज़ एसटिक एसिड (सिरका ख़ालिस) में सुगंधित चीज़ें मिलाकर यह बनता है और सिर के दर्द में लगाया जाता है; जिससे दर्द कम हो जाता है।

Arrowroot (आरारूट)—आरारोट। यह एक प्रकार का तीखुर है जो कई क़िस्म के पौधों के मुसरों वा जड़ वा गांठ से निकाला जाता है। अमेरिका के टापुओं में आरारूट के पौधे बहुत होते हैं। और सब से अच्छा आरारूट बरमुडास (Bermudas) और जमैका टापू से आता है। यह सफ़ेद रंगकी बुकनी हलकी और अपारदर्शक होती है। यह इतनी हलकी और जल्द हज़म होनेवाली चीज़ है कि छोटे बच्चों और बड़े कमज़ोर बीमारों को खिलाई जाती है। अब यह चीज़ कई तरह के पौधों से निकाली जाती है। हिन्दुस्तान में भी इसके पौधे पैदा होने लगे हैं। बम्बई प्रान्त में यह बोया जाता है।

Arrowroot, Indian (इंडियन आरोरूट)—तीखुर। यह पौधा मध्य प्रदेश खास करके गोदावरी के ज़िलों में बहुत होता है। इसका व्यापार हिन्दुस्तान में बहुत होता है।

Arsenic (आरसेनिक)—यह लोहे के रंग का एक तुनुकभंज चमकदार धातु है इसकी भस्म बड़ी ज़हरीली होती है। खानों में यह कभी कभी ख़ालिस ही मिलता है। मगर ज्यादातर गंधक या दूसरे धातुओं के साथ मिला हुआ पाया जाता है [१] जैसे हरताल जो गंधक और

आरसेनिक के मेल से बनता है [२] संखिया जो आकसाईड आफ़ आरसेनिक (Oxide of arsenic) है अर्थात आरसेनिक का भस्म है और अलग तयार किया जाता है। इसे दूसरे धातुओं में उन्हें कड़ा बनाने के लिए मिलाते हैं। यह बहुत तेज़ ज़हर है।

Arsenious acid (आरसीनियस एसिड)—यह सफ़ेद संखिया से तयार की जाती है जो दवाएं और कई हुनर के काम आती है। घोड़े को कभी कभी ज़रा सा दे देने से उसका चमड़ा चमक उठता है। मलेरिया बोखार में बतौर दवा के खिलाया जाता है। जरमनी और इंगलैंड में इसके कारखाने हैं। इसमें से एक क़िस्म का सब्ज़ रंग निकलता है। जिससे दिवारों पर या कागज़ में रंग दिया जाता है।

Artificial Fuel (आर्टीफीशल फ़ूयल)—Briquette देखो।

Asafœtida (असाफोइटिडा)—हींग। यह दो क़िस्म के पेड़ की राल या गोंद है। जो फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान से आती है। पेड़ की जड़ के पास पछना लगा देते हैं, जिसमें से दूध निकलता है। अतः जड़ को धूप से बचाए रखते हैं। इसलिए फ़ूस के छोटे छप्पर जिसे 'खोरी' कहते हैं बनाकर छाया रखते हैं। १ या १½ महीने में दूध जमकर लाल रंग की राल सा जम जाता है। इसी को हींग कहते हैं। यह दवा में और खाने के मसाले में बरती जाती है। उमदा हींग को हींग [Ferrula alliacea] और घटिया को हींगड़ा [F. foetida] कहते हैं। कंधारी हींग ख़ालिस और उमदा होती है, बाक़ी और हींग में मैदा, तवामट्टी वग़ैरा मिली रहती है। एक तीसरी क़िस्म ख़ुश्की होती है यह हिन्दुस्तान में बिकने नहीं आती।

हींग हर साल अफ़ग़ानिस्तान, सीसतान वग़ैरा से हिन्दुस्तान में आती है १९०३-४ में २६३८९१), सन १९०४-५ में २५८७६२), १९०५-६ में १३८९०१), १९०६-७ में १५९८७३) की हींग ख़ुश्की के राह से आई। सन १९०६-७ में समुद्र के रास्ते से भी २४२६३५) की आई।

Asbestos (असबेसटॉस)—यह एक रेशेदार खनिज पदार्थ है बंबई में

इसे संख का पलीता कहते हैं। प्रायः यह नाम एक क़िस्म के Horn-blende या Pyroxene का भी है। ज्वालामुखी परबतों में से यह पदार्थ पैदा होता है। इसका रंग सफ़ेद या सब्ज़ होता है और रेशम की तरह की चमक इसमें होती है। सब से उत्तम असबेसटास को अमियन्थस [Amianthus] कहते हैं। इसका विशेष गुण यह है कि यह जल्दी जलता नहीं। इसलिए गेस के भट्ठे बनाने में इसका बड़ा काम पड़ता है और आग में न जलनेवाले कपड़े तयार करने में भी यह चीज़ काम में लाई जाती है। गरमी और विजली का प्रवेश इसमें बहुत कम होता है इसी से स्टीम-पाइप वो विजली की तार इस से लपेटी जाती है। इंजीनियरिंग में इसका बहुत इस्तेमाल होता है। इंजनों के जोड़ इसी से भरे या बन्द किए होते हैं। यह पदार्थ कार्नवाल के मुक़ाम कारसिका [Corsica] में और स्काटलेंड, कनाडा, इटली, टस्मेनिया, इत्यादि में मिलता है। यह बड़े काम की चीज़ है।

Asphalte (अस्फ़ाल्ट)—यह एक क़िस्म की काली चीज़ राल के तरह की वस्तु मट्टी-के-तेल की खानों में पाई जाती है और कड़ी मट्टी की चट्टान की तरह निकलता है। इसे गच वा सड़क बनाने, छात की दर्ज़ बंद करने, या लोहे व गेस के पाइप के रंगने के काम में लाते हैं। जापान वारनिश में इसका भाग बहुत मिला रहता है। यह त्रिनिडाड देश में बहुत पायी जाती है। Val de Travers, Vand, Germany, France इत्यादि देशों में भी सूखी हुई पाई जाती है।

(१) अस्फाल्ट की वारनिश—कोल टार अर्थात अलकतरा को इतना उबाले कि वह ठंडा होने पर कड़ा हो जाय, इसकी पहचान यह है कि ज़रा सा लेकर किसी धात की तख़्ती पर मलने से तयार होने पर वह कड़ा होने लगेगा। तब उस में पांचवां हिस्सा अस्फ़ाल्ट की डलियां डालकर मिलावे जब दोनों टिघल कर मिल जायं तब उतार कर ठंढा कर ले। यह चमकदार वारनिश धातकी चद्दरों पर लगाने की बहुत अच्छी चीज़ होती है।

Atropa Belladona—Belladona देखो।

Aurin (औरीन)—Coralline देखो।

Aventurine (एवेंचुरीन)—यह एक प्रकार का नग संग सितारा की नाईं होता है जिसपर सोनहरे दाग़ या सितारे होते हैं। इसमें चमक भी ज्यादा होती है। किन्तु याक़ूत से इसकी क़ीमत कम है। यह संग अधिक करके यूराल पहाड़ में मिलता है।

Azurite (अज़ूराईट)--यह एक खनिज पदार्थ है जिसमें से ताम्बा निकलता है। यह नीले रंग का कारबोनेट आफ कापर है। या नीले रंग का मलाचाइट (Blue Malachite)। यह देखने में बहुत सुन्दर पदार्थ है और फ्रांस और इंगलैंड में मिलता है। कभी कभी लेज़लाइट [Lazalite] नामक खनिज पदार्थ को भी अज़ूराईट बोलते हैं।

B.

Babool (बबूल)—बबूल, कीकर । इस पेड़ की गोंद मशहूर है । इसकी छाल और फल का कसाव चमड़ा तयार करने के काम में आता है और इसके लिए इसकी मांग बहुत रहती है । कीकर कइ जाति का होता है । इसकी ४३० जातियां हैं जिनमें से २२ जाति के पेड़ हिन्दुस्तान में होते हैं ।

Badger (ब्याजर)—यह सौथ अमेरिका में निवले के जाति के एक जीव का नाम है । इसका बाल बड़े काम का होता है, इसके कूंची और बुरुश बनते हैं ।

Baize (बैज़)—मोटी बानात या फ़र्श, परदे या बांधने के काम का एक क़िस्मका बिना हुआ यह ऊनी कपड़ा होता है ।

Baking powder (बेकिंग पौडर)—Soda, Bicarbonate of देखो ।

Balata (बलाटा)—एक क़िस्मकी रबर की नाईं गोंद । यह प्रायः [British Guiana] बृटिश ग्वायना में पैदा होती है ।

Baleen (बालीन)-ह्वेल मछली के तालू का कचकड़ा । एक एक कचकड़ा १० से १४ फुट तक का होता है और उसके मुंहके दोनों ओर दो दो सौ कचकड़े रहते हैं । यही चीज़ ह्वेल॰ बोन [Whale Bone] के नाम से बिकती है ।

Balsams (बालसम्)—बिलसान । यह गुगुल के पेड़ के जाति के एक पेड़ से जो राल या गोंद निकलती है उसे कहते हैं । पेड़ों में पछ्ना लगाकर उसका तेल सरीखा दूध निकालते हैं जो जमने पर गाढ़ा और ठोस हो जाता है । बिलसान भी कई क़िस्म का होता है । कनाडा का बिलसान [Canada Balsam] से सूक्ष्म-दर्शक में देखने की सूक्ष्म चीज़ें चिपकाई जाती हैं और लेन्स [ताल] जोड़े जाते हैं । कोपरिबा बिलसान [Copriba balsam] लाह-वारनिश में मिलाया जाता है या ट्रेसिंग पेपर के काम आता है । पेरू का बिलसान या टोलू का बिलसान [Peru or Tolu balsam] सुगंधित द्रव्य बनाने में काम आता है । ऊपर

के लेख से मालूम होगा कि बिलसान कई तरह का होता है, जहां कहीं केवल बालसम [balsam] का शब्द प्रयोग किया गया हो वहां पेरू या टोलू का बिलसान समझना चाहिये।

Balsam, Mecca (मक्का बालसम) –गुगुले मक्की। अरब देश का गुगुल।

Bamboo (बम्बू)—बांस। बांस कई क़िस्म के होते हैं, ठोस, पोले, मोटे, पतले, लाम्बे, नाटे वग़ैरा इस जाति में बेन्त और निरगल की भी गिनती की जाती है। असल में यह एक प्रकार के बड़ी बड़ी खरवाली घास हैं। बांस बड़े कामकी और सस्ती चीज़ है। इसकी चटाई, टोकरी, खम्बे, नालियां, पंखे, कुरसियां, टट्टर, छप्पर, और अनेक भांति की चीज़ें बनाई जाती हैं। इमारती काम में यह बहुत बरता जाता है। छाते की डांड़ी बनाने में अब इसका इस्तेमाल बहुत होता है। छड़ी, दंडे, सोंटे वग़ैरा कहां तक लिखा जाय संक्षेप यह की यह बहुत काम आता है। आसाम, बंगाल, बर्मा, सयाम, चीन इत्यादि देशों में इससे सैकड़ों चीज़ें उपयोगी बनाई जाती हैं, यहां तक कि केवल बांस से ही पूरा मकान तयार हो जाता है। बर्ह्मा व आसाम में तो लोग कच्चे बांस के चोंगे में चावल व पानी भरकर आग पर पका लेते हैं, मानों हांडी का काम उस से ले लेते हैं। इसके गूदे वा छिलके के रेशों को पतला पतला तराश कर बंधन तक बनाते हैं। बांसके कोंपल का मुरब्बा और आचार तक तयार किया जाता है।

Bancoul nuts (बंकूल नट)—यह एक पेड़ का बीज है जिससे तेल निकाला जाता है। इस तेल में वही सब गुण हैं जो रेंड़ी के तेल में होते हैं, किन्तु रेंडी के तेल से यह पतला होता है और इसमें दुर्गंधि नहीं होती। रौग़नी तस्वीर बनाने वाले के काम का तेल है।

Banana (बनाना)—एक प्रकार का केला। यह केले बड़े और पुष्ट होते हैं। अमेरिका देश में बहुत पैदा होते हैं। बम्बई प्रान्त का लाल छिलके वाला बड़ा केला भी एक प्रकार का बनाना है; बंगाल देश में इसका नाम अग्नीश्वर (Red banana) है।

Banana Oil (बनाना आयल)—यह तेल यद्यपि बनाना केले का तेल कहाता है परन्तु वास्तव में यह केले का तेल नहीं है। यह कृत्रिम तेल 'एमिल एसिटट' (Emyl acetate) और 'एथिल ब्यूटिरेट' Ethyl butyrate) को मिलाने से तयार होता है। इसकी सुगंधि ठीक पके हुये केले के समान होती है।

Baobab (बौबब)—यह पच्छमी अफ़रिका का एक बड़ा पेड़ है। इसकी पत्तियां बुखार और अतिसार के बीमारी में दी जाती है। इसकी छाल काग़ज़ बनाने के लिए चलान होती है और पेड़ के डंठे में से रेशे निकाल कर उनके रस्से बनाते हैं।

Bareges (बारीज़ेज़)—करेब। रेशम और ऊन मिला बारीक कपड़ा। गरमी में स्त्रियों के पहिनने के लिए पीरेंज़ीज़ देश में तयार किया जाता है।

Barilla (बेरिला)—सज्जीखार। यह कारबोनेट् आफ़ सोडा है जिसमें राख वग़ैरा मैल मिली रहती है। पहिले इसीसे कारबोनेट आफ़ सोडा बनता था पर जब से वह नमक से बनाया जाने लगा है तबसे इसकी मांग कम होगई है। गोरालना (Salsola fœtida) नामक पेड़ की राख में सज्जीखार बहुत होती है और इसे जलाकर उसकी राखसे ज्यादा करके यह निकाली जाती है।

Barium (बेरियम)—यह एक प्रकार का धातू है। यह बारीटा Baryta मट्टी में पाया जाता है। यह कइ प्रकार के खनिज पदार्थ से निकाला जाता है। यह आकसीजिन (oxygen) बनाने के काम में आता है। इसकी कई खार होती हैं। जैसे बेरियम नाइट्रेट (Barium Nitrate), बेरियम कारबोनेट (Barium carbonate) और बेरियम सलफेट (Barium sulphate)। पहिली खार आतशबाज़ी के काम आती है। आतशबाज़ी में देने से हरे रंग की रोशनी होती है और दूसरी कांच बनाने में काम आती है और तीसरी खार (Barium sulphate) का सफ़ेद रंग उत्तम बनता है और यह मध्यप्रदेश और मद्रास के चंद ज़िलों में पाया जाता है।

Bark (बार्क)—छाल। बहुत से पेड़ों की छाल चमड़ा पकाने और रंग बनाने के काम में लाई जाती हैं। बहुतेरों की छाल से रेशे निकाले जाते हैं। इनका प्रथक प्रथक बरनन किया गया है।

Barley (बारली)—यव, जव बारली। यह एक क़िस्म का बिलायती जौ है। यह नारफ़ोक और सफ़ोक (इंगलैंड) की हलकी ज़मीन में पैदा होता है। इससे शराब बनती है और इसका आटा मरीज़ों को खाने के लिए दिया जाता है। हिन्दुस्तान में भी देशी जौ लगभग ८० लाख एकड़ में बोया जाता है। सन १९०९-१० में १८३९०००) का जौ विदेशों को हिन्दुस्तान से रवाना हुआ था। पर्ल बारली (Pearl Barley) साफ़ किये हुए और कुटे हुए बारली वा जौ को कहते हैं।

Bastard Sago (बांसटर्ड सागो)—Kitool देखो।

Bastard Sandal (बास्टार्ड सैंडल) Sandal, Bastard देखो

Bath Brick (बाथ ब्रिक)—बालू और पीली मट्टी मिलाकर छोटी छोटी ईंट बनाई जाती हैं, जो झांवें की तरह सफ़ाई करने के काम आती हैं। इस से सिल्ली का भी काम लिया जाता है और छुरी वग़ैरा तेज़ की जाती हैं।

Bath Stone (बाथ स्टोन)—दूधिया रंग का एक पत्थर है। इसमें बालू का नाम मात्र भी नहीं रहता। खान से निकलती वक्त तो बड़ा नर्म रहता है मगर बाद में सख्त हो जाता है।

Batiste (बेटिस्टी)—कमरख नामक कपड़ा। एक प्रकार का बारीक़ कपड़ा जिसे कमरख या कमरक कहते हैं।

Bauxite (बॉक्साइट)--एक प्रकार का खनिज पदार्थ जिसमें से अल्यूमीनियम बहुत निकलता है।

Bay Cherry (बे चेरी)--Candle berry देखो।

Bay Rum (बे रम)—एक प्रकार की खुशबूदार स्पिरिट। यह प्रायः सुगंधि बनाने के काम में आती है।

Bdellium (डेलियम)—गुगुल, गुग्गुल। यह इसी नाम के पेड़ की राल है। यह पेड़ सिन्ध, काठियावाड़, राजपूताना वगैरा और खांनदेश में बहुत होता है। गुगुल अमरावती से ज्यादा चलान होती है। एक दूसरी क़िस्म इसकी सिलहट में होती है, मगर यह घटिया मेल की होती है, असल गुगुल नहीं है। गुगुल दवाके काममें भी आती है लेकिन बम्बई में गारे में मिलाकर दर्ज़बंदी के काम में ज्यादा लाई जाती है। एक तीसरी क़िस्म की गुगुल अफ़रिका से आती है, उसे 'मिटिया' या 'चिनिया बोल' कहते हैं। सब से अच्छी जाति की गुगुल को 'बंदर करम' बम्बई में कहते हैं। हिन्दुस्तान में इसको जलाते हैं, इसके धूएं में एक प्रकार की अच्छी महक होती है।

Beads (बीड्ज़)—पोतके दाने, मनका (मालाक दाने)। यह कांच, चीनी मट्टी, हाथीदांत, स्फटिक, मूंगे, अम्बर वग़ैरा कई चीज़ों के बनाए जाते हैं। कांचके उमदा दाने वेनिस (Venice) में बनते हैं और फ्रांस में नक़ली नगके दाने बहुत बनते हैं। मालेके दाने फल के बीयोंके या हड्डियों के भी बनते हैं।

Beam tree (बीम् ट्री)—बीम का पेड। इसकी लकड़ी सख़्त और पीले रंग की होती है। योरप में बहुत पाई जाती है। इस लकड़ी के दस्ते, मूठ और गाड़ीके बेलन इत्यादि बनाए जाते हैं।

Bear Skin (बेयर स्किन)—भालू की खाल। नार्थ अमेरिका से यह बहुत चलान होती है और इसकी ज़ीन, टूपी, छोटे क़ालीन वग़ैरा बनते हैं।

Beaver (बीवर)—एक क़िस्म का जानवर है जिसको जलबिलाव कह सकते हैं। इसके खाल की बड़ी क़द्र की जाती है। नार्थ अमेरिका में यह बहुत होता है।

Becke-de-mer (बेक डी मर)—त्रिपंग। एक क़िस्म का घोंघा। जो समुद्र में उस जगह पाया जाता है जहां मूंगा होता है। चीनके लोग इसे बड़े स्वाद से खाते हैं। हिन्दुस्तान में इसे त्रिपङ्ग कहते हैं।

Bedda nuts (बेडा नट्स)—बहेड़ा। इसका कसाव चमड़ा तयार करने, काला रंग बनाने और छींट छापने के बड़े मतलब का होता है।

Beech (बीच)—यह योरप का एक पेड़ है इसकी लकड़ी ठोस और कड़ी होती है। बीच लकड़ी मशहूर है। इसके चैलों से सिरका, पोटाश और तेल भी तयार होता है।

Beer (बीयर)—बीयर शराब। जौ, बाजरा, जई और धान से यह शराब बनती है।

यह विदेश से हिन्दुस्तान में बहुत आती है जैसा कि इस ब्योरे से मालूम होगा। सन् १९०७-८ में ६१,११,०००) की, सन् १९०८-९ में ५८,१०,०००) की, और सन् १९०९-१० में ५४,२८,०००) की आई।

Bee's Honey (बीज़ हनी)—शहद, मधु, । कई क़िस्म की मक्खियां फूलों से शीरा लेजाकर एक छत्ते में बटोरती हैं। ताज़े मेवे इसमें रखने से सड़ते नहीं। शहद खाया भी जाता है। शहद की मक्खियां पाली भी जाती हैं। विलायत में शहद की मक्खियां पालकर बहुत शहद बटोरा जाता है और इसका व्यापार ख़ासा होता है। इन मक्खियों के पालने की विद्या ही अलग है और अंगरेज़ी में इस विषय की कई पुस्तक छप चुकी हैं।

Beeswax (बीज़व्याक्स)—शहद के छत्ते की मोम। मक्खियां जिस छत्ते में शहद तयार करती हैं उसे मोम का बनाती हैं। असल में छत्ते की मोम का रंग पीला होता है और साफ़ करके सफ़ेद मोम बना ली जाती है। मोम को आंच पर पिघलाकर पानी में डाल देते हैं, मोम पानी पर फैलकर जम जाती है। इसी प्रकार दो तीन बेर करने से वह स्वच्छ हो जाती है।

Beet (बीट)—चुकंदर। यह एक प्रकार का कंदा है जो पीला, लाल और देसी तीन क़िस्मका होता है। सिलेसियन जाति के चुकंदर से शक्कर या चीनी तयार की जाती है जो Beet sugar [बीट शूगर] कहाती है और आस्ट्रिया हङ्गरी से बहुत ज्यादा आती है। जरमनी से जो चीनी आती है वह चुकंदर से निकाली हुई होती है। इसको कुचलकर और 'प्रेस' में दबाकर इसका रस निकाल लेते हैं और इस रसको हलकी आंच पर चूने के पानी के साथ गरम करते हैं जब मैल छट जाती है तब इसको टपके से छानकर साफ़ और स्वच्छ कर लेते हैं।

हिन्दुस्तान में विदेशी शक्कर की आमिदनी का ब्योरा:—

सन् १९०७-८ में ७९४०६० हंड० मालियती

१९०८-९ में १९४४०१३ „

१९०९-१० में ८५९२०६ „ मालियती १०६९९०००) का

Belladona (बेलाडोना)—बेलाडोना। जिस पौधे से यह दवा निकाली जाती है वह शिमला से काश्मीर तक हिमालय पहाड़ों में पाया जाता है इसे हिन्दुस्तानी में संग अंगूर, अंगूर शेफा, गिरबूटी, उस्त्रङ्ग, छुकमना वग़ैरा कहते हैं। अंगरेज़ी में Atropa Belladona or Deadly Night-shade कहते हैं। हिमालय में यह पेड़ बहुत होता है तौ भी अभी इसका व्यापार यहां नहीं किया जाता। बेलाडोना दर्दकी मशहूर दवा है। इसका रंग काला और यह तेल की चिकट की तरह लसदार होती है।

Belts, belting (बेल्ट, बेल्टिङ्ग)—तस्मा। कल चलाने के लिए चमड़े, सूत, रबड़, जूट और गट्टा परचा के तस्मे बनाए जाते हैं। सूतका तस्मा सबसे ज्यादा मज़बूत होता है। इससे उतरकर रबड़ और चमड़े के तस्मे मज़बूत होते हैं।

Ben oil (बेन आयल)—सजीना या सहजना का तेल। घड़ी साज़ों के काम का बहुत अच्छा तेल है और इस काम में बहुत इस्तेमाल होता है। Horse-Radish देखो।

Benzoic acid (बेन्ज़ोइक एसिड)—लोबान, लोबान का सत। यह दवा 'लुबान' या 'कच लोबान' नामक पेड़ की राल है। ज्यादातर सुमात्रा या सायाम में होता है। सायाम का लोबान ज्यादा क़ीमति और उत्तम होता है। यह एसिड घास दाना खानेवाले पशुओं के मूत्र से भी तयार किया जाता है और जर्राही वो दवा में काम आता है।

Benzene (बेन्ज़ीन)—Aniline देखो।

Benzole (बेन्ज़ोल)—यह कोलटार में से निकलता है। इसी से अनीलीन रंग तयार होते हैं। इसलिए यह बड़े काम की चीज़ है। यह तरल द्रव्य पानी से हलका और तेज़ महक वाला है। चरबी, राल, गंधक,

फ़ास्फ़ोरस, वग़ैरा इसमें जल्द घुल जाते हैं। चरबी का दाग़ इससे फ़ौरन छूट जाता है।

Bergamot (बर्गामट)—बरगमट। यह खुश्बूदार तेल एक क़िस्मकी नारंगी (Citrus Bergamia) के छिलके से निकाला जाता है। यू-डी-कलोन मोमरोगन वग़ैरा कई सुगंधित द्रव्य इससे तयार की जाती हैं। पलेरमो (Palermo) और मसीना (Messina) देश में यह बहुत बनता है।

Beryl (बेरिल)—पनुआ इसका रंग भूरा नारंजी होता है। यह एक प्रकार का रत्न है जिसे पन्ने का भाई कहना चाहिए। इसे अकुवामेराइन [Aquamarine] भी कहते हैं। योरोप में कई जगह और हिन्दुस्तान में कोयम्बटूर ज़िले के पद्दुयुर मुक़ाम और टोडा पहाड़ [राजपूताना] में पाया जाता हैं। जिस खान से यह निकलता है वहां आसमानी रंग का पत्थर भी निकलता है जिसे अंगरेज़ी में बेरिलिया [Beryllia] कहते हैं।

Bessemer Steel (बेस्मर स्टील)—स्पाती लोहा, ढलवां पौलाद। यह ख़ास रीति से तयार किया जाता है। इसके बनाने की रीति Bessemer साहब ने सन् १८५६ में निकाली थी इसलिए उस रीति से जो स्पात बनता है यह उसी का नाम है। इस लोहे से रेल की पटरी, रोलर, वाइलर, हाल, जहाज़ों के ऊपर मढ़ने के पत्तर बनाए जाते हैं। ढलुवें लोहे को एक बन्द वर्तन में, गला कर उसमें हवा का ख़ूब प्रवेश करते हैं जब उसमें मिले हुए कोयले [Carbon] का अंश भस्म हो जाता है तो स्पाइगेलिसेन (Spiegeleisen) मिलाते हैं और तब यह स्पात तयार हो जाता है।

Betelnuts (बीटिलनट)—सुपारी। यह हर साल लगभग ८० लाख रुपए की बाहर से आकर हिन्दुस्तान में खपती है। सन् १९०८-९ में ८०,७८,०००) की और सन् १९०९-१० में ८८,०२,०००) की ५४५२१ टन सुपारियां बाहर से हिन्दुस्तात में आई। इसका पेड़ 'पाम' (खजूर) की एक जाति का है। इसे हिन्दुस्तान में पान के साथ बहुत खाते हैं। इसे जलाकर दांत का मंजन भी बनाते हैं।

Bezoar (बेज़ोर)—पादज़हर, ज़हरमोहरा। यह एक प्रकार का पत्थर है जो फ़ारस के जंगली बकरों के पेट के अंदर से निकलता है। यह तर जगह झट चिपक जाता है। यह खयाल कि इसके लगाने से सांप का ज़हर उतर जाता है ग़लत है।

Bhang(भांग)—भांग, भंग। यह एक प्रकार के पौधे की पत्ती है इसे पीस कर पीने से नशा होता है, हिंदुस्तान में बहुत पी जाती है।

Bicarbonate of Soda (बाइकरबोनेट आफ़ सोडा)—Soda Bicarbonate देखो।

Bichromate (बाइक्रोमेट)—Chromium देखो।

Bichromate of Potash (बाइक्रोमेट आफ पोटास)—नारँजी कसीस। फ़ोटोग्राफ़ी [Photography] व फ़ोटो एचिंग ब्लाक [Photo etching blocks] बनाने में बहुत काम आता है।

Biotite (बायोटाइट)—Mica देखो।

Birds Skins (बर्ड्ज स्किन)—चिड़ियों की खाल पर सहित। हज़ारों तरह के पक्षियों की खाल विलायत जाया करती है। स्त्रियां के टोपी इत्यादि में लगाते हैं।

Biscuit (बिस्कुट)—बिस्कुट। यह एक क़िस्म की अंगरेज़ी तरीक़े से पकाई हुई खाने की टिकिया होती है। यह कई तरह से बनाया जाता है। इसे एक प्रकार की नानखताई कहना चाहिए। यह सूजी, मैदा, आटा या आरारूट का बनाया जाता है। अब हिन्दुस्तान में भी इसके कारखाने हो गए हैं, इस पर भी लगभग २८ लाख रुपए से ज्यादा का बिस्कुट विलायतों से आता है।

Bismuth (बिस्मथ)—बिस्मथ। यह एक सफ़ेद लाली आभा लिए हुए रंगकी, नर्म, डलेदार (कलमी) धात है। इसे टिन ग्लास (Tin glass) भी कहते हैं। यह कार्नवल (Cornwall), फ्रांस (France), पेरू (Peru), साइबीरिया (Siberia) वग़ैरा कई देश में मिलती है, विशेष करके साक्सनी (Saxony) में बेहद मिलती है। दूसरे धातुओं के साथ यह बहुत जल्द मिल जाती है। बिस्मथ मिला धातू बड़े काम आता

है। सबसे मशहूर इसका मिलुवां धातू फ्युजिब्ल मेटल (Fusible metal) कहलाता है जो २ भाग बिस्मथ, १ भाग सीसा व १ भाग रांगा मिलाकर बनता है। इसके चमचे बहुत बनते हैं। इसमें पारा भी मिलाया जाता है। इसकी और भी कई चीज़ें बनती हैं। बिस्मथ दवा के काम में भी आता है।

टीन के डब्बे वग़ैरा झालने के लिए जो टांका इसके मेल से बनता है वह थोड़ी आंच में ही पिघल जाता है—$१\frac{१}{४}$ रतल सीसा गलाकर उसमें २ रतल रांगा गलावे फिर उसमें २ औंस बिस्मथ मिलाकर यह मसाला बना ले।

Bitartrate of potash (बाईटारटरेट आफ़ पोटाश) —Tartar, Cream of—देखो।

Bitumen (बिटूम्यन्)—कफ़ुल यहूद, शिलाकफ़, पिच। यह एक प्रकार का तेल या पिच है जो खान में पाया जाता है। फ्रांस, इटली, हालंड और त्रिनिडाड में बहुत पाया जाता है और निकाला जाता है। बाज़ारी बिटुमेन् में रेत मिली रहती है। इसकी महक बिचित्र होती है और आगमें फौरन् जलने लगता है।

Bituminous coal (बिटूमिनस कोल)—इसे अगर तेलिया कोयला कहा जाय तो बेजा न होगा। इस कोयले में रौग़न या राल के क़िस्मका द्रव्य रहता है। इसलिए वह खूब बलता है। इससे ख़ालिस गेस रोशनी के वास्ते बनाई जाती है।

Blacking (ब्लेकिङ्ग)—जूतेकी स्याही, चमड़ा स्याह करने की स्याही। यह कई तरह से तयार होती है। हड्डी का कोयला, तेल, शकर और गंधक का तेज़ाब इसके ख़ास जुज़ हैं। यह गाढ़ी चीज़ होती है और जब पतली करना होता है तो सिरका मिलाकर पतला कर लेते हैं। ज़ीन वग़ैरा साफ़ करने वाले मसाले में तारपीन, मोम, हड्डी का कोयला और कोपाल वारनिश मिलाते हैं।

Black Jack (ब्लाक ज्याक)—Blende देखो।

Black lead (ब्लाक लेड)—ग्राफाइट। असल में यह शुद्ध कारबन है। धातू से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। यह वही खनिज पदार्थ है जिससे

पंसिलें बनती हैं और एलेक्ट्रो टाईप (Electro type) बनाने के काम में लाया जाता है। इसे ग्राफाइट (Graphite) या प्लम्बेगो (Plumbago) भी कहते हैं। यह सिलोन, साईबीरिया, बोहेमियां और बवेरिया में मिलता है किन्तु कम्बरलैंड में सबसे अच्छा पाया जाता ह। पंसिल बनाने के अतिरिक्त इसकी घरिया और लोहे पर चढ़ाने का हेप या पालिश भी बनता है। पिसा हुआ ग्राफ़ाईट चिकना होता है, इसे कलके पुर्जोंके चूलमें तेल मिलाकर देनेसे रगड़ बहुत कम हो जाती है। रियासत ट्रावंकोर में इसकी खान निकली है। सन् १९०८ में यह पदार्थ इस खान से २८८३ टन मालियती २,१५,४७५ रुपया का निकाला गया था।

Black Salt (ब्लाक साल्ट)—कालानिमक। यह भिवानी [जिला हिसार] में तयार किया जाता है। मामूली नमक को हड़, बहेड़ा और सज्जी के साथ आग पर चुराते हैं वह गलकर काला निमक बन जाता है।

Black Tin (ब्लाक टिन)—मेल का रांगा वा मिलवां रांगों को कहते हैं। रांगे में प्रायः लोहा, तांबा, सीसा, संखिया और सुरमा मिला रहता है। जब रांगा गलाकर निकाला जाता है तब यह धातु भट्टे में रह जाती है। इसी को ब्लाक टिन कहते हैं।

Black wood (ब्लाक उड)—Dalbergia देखो।

Blankets (ब्लांकेट)—कम्बल। यह ऊनका मोटा कपड़ा है या ऊन और सूत मिलाकर गर्भ-सूती भी बनता है। यह ओढ़ने या बिछाने के काम आता है। इसका बहुत ब्यापार सब देशों में होता है। सबसे उमदा कम्बल मैसूर में बनते हैं। बम्बे प्रेसिडेंसी में गुजरात की धाबली मशहूर है। बम्बे ऊलन मिल में भी कम्बल बनते हैं। संयुक्त प्रान्त में उमदा कम्बल मुज़फ़रनगर व कस्बा मीरांपुर और बहराइच, मुकामात लावर व नीरपुर व ज्वालागढ़ जिला मीरठ और कस्बा नजीबाबाद ज़िला बिजनौर में बिने जाते हैं। गढ़वाल इत्यादि पहाड़ी लोग भी नफ़ीस कम्बल या धुस्से बनाते हैं जो पंखी और थुल्मा कहाते हैं और प्रायः धारीदार बनते हैं। कानपुर ऊलन मिल्ज़ में भी अच्छे कम्बल तयार होते हैं। लोइयों की भी गिनती उमदा कम्बल में की जा सकती

है और यह अमृतसर की मशहूर हैं। पंजाब के और काबुली कम्बल व धुस्से भी उत्तम होते हैं। देशी कम्बल बाज़ बाज़ मुक़ामों के निहायत नफ़ीस होते हैं, पर इसका रोज़गार बेक़ायदा होता है इसलिये यह पनपता नहीं। कम्बलों की मांग देशी कारखाने पूरी नहीं कर सकते अतः विलायती कम्बल व रग्ज़ बहुत आकर बिकते हैं।

कम्बल दिहातियों और किसानों के लिये बड़ी अमूल्य चीज़ है, जाड़े में वे बिचारे इसीको ओढ़ और बिछाकर अपना गुज़ारा करते हैं और शहरी लोग कम्बल को प्रायः बिछाने के काम में लाते हैं।

Bleaching Powder (ब्लीचिंग पाउडर)—मेराइ या निथार का मसाला, क्लोराइड आफ़ लाइम (Chloride of Lime)। काग़ज़, कपड़ा, सूत वग़ैरा साफ़ व सफ़ेद करने के लिए यह मसाला काम में लाया जाता है।

यह भूरे रंग का चूर्ण होता है और इसमें तेज़ महक रहती है। बुझे हुए चूने में क्लोराइन (Chlorine) मिलाने से बनता है। क्लोराफ़ार्म तयार करने में भी काम आता है, पाखानों व पेशाब खानों में बदबू दूर करने के लिये भी इस्तेमाल किया जाता है। यह लगभग ४ लाख रुपए का हर साल विदेश से हिन्दुस्तान में आता है।

सन १९०८-९ में ४,५६,००० रु० का
" १९०९-१० में ३,८६,००० "

Blende (ब्लेंड)—सलफाइड आफ़ ज़िंक [Sulphide of Zinc]। इसी से जस्ता निकलता है [और भी बहुत से खनिज पदार्थ जिसमें गंधक मिला रहता है ब्लेंड कहाते हैं] इसका रंग प्रायः काला होता है क्योंकि उसमें लोहे का अंश रहता है, इसलिए इसे ब्लैक ज्याक [Black Jack] भी कहते हैं।

Blind Coal (ब्लाइंड कोल)—यह भी Anthracite का नाम है।

Blister Steel (ब्लिस्टर स्टील)—जौहरदार फ़ौलाद। यह एक क़िस्म का फ़ौलाद है जिस पर फफोले के से दाग़ [जौहर] मालूम देते हैं। इस से रेतियां और कई औज़ार बनते हैं।

Blubber (ब्लबर)-ह्वेल या दूसरे समुद्री जानवरों की चरबी है।

Blue Stone (ब्लू स्टोन)--नीला थोथा, तूतिया । यह वस्तु तांबे और गंधक के मेल से बनती है। इसे सलफ़ेट आफ़ कापर या कापर सलफ़ेट [Sulphate of Copper or Copper Sulphate] भी कहते हैं ।

Boards (बोर्ड)—काठका तखता जिसकी मोटाई ९ इंच से कम हो उसे अंगरेज़ी में बोर्ड और जो तखते ज्यादा मोटे होते हैं उन्हें प्लांक (Planks) कहते हैं । काग़ज़ की मोटी दफ़ती को भी बोर्ड कहते हैं।

Bole (बोल)—गिले अरमनी, बोल मिट्टी। यह एक मिट्टी है जो कई रंग की लाल, पीली या बादामी होती है । इसमें लोहेका अंश बिशेष रहता है। मुलतानी मट्टी भी इसी जाति की मट्टी है । बोल मट्टी दांत के मंजन बनाने में काम आती है ।

Bones (बोनज़)—हर क़िस्मके जानवरों की हड्डी । हड्डी से बड़ी उमदा खाद बनती है । हिन्दुस्तानी किसान इसके फ़ायदे अभी नहीं जानते हैं । हड्डियां पीस पीस कर लाखों मन बिदेशों में भेजी जाती है। सन् १८०४-५ में ६८२०३ टन् मालियत ३७,५७,४८०), सन १९०५-६ में ८७५५२ टन् मालियती ४९,७८,७७८) और सन् १९०६-७ में ९३७६० टन् मालियती ५५,४५,२४१), सन् १९०७-८ में ५४,४५,०३४) की, सन् १९०८-९ में ५१,७८,५२०) सन् १९०९-१० में ५३,६८,६४१ रुपया की चलान हुई । जानवरों के हड्डी की कई तरह की नफ़ीस चीज़ें भी बनती हैं जैसे काग़ज़-तराश, दस्ते, सुर्मेदानियां इत्यादि ।

Bone black (बोन ब्लाक)—हड्डी का कोयला, हड्डी का काजल। हड्डी को बरतन में बंद करके खूब तेज़ भट्टे में जलाते हैं । जब बर्तन लाल हो जाता है तब निकाल लेते हैं । इस हड्डी के कोयले का यह गुण है की मैल काट देता है। इसीलिए शक्कर साफ़ करने में इसका इस्तेमाल बहुत होता है। पानी में पीसकर सुखाने पर यह उत्तम काजल बन जाता है जिसकी काले रंग की सियाही व वारनिश वग़ैरा बनती हैं। ईसी को आइवरी ब्लाक (Ivory black) कहते हैं ।

Bone ash, Bone earth (बोन ऐश, बोन अर्थ)—हड्डी की राख । इस से धातु खूब साफ़ और पालिश होती है और इस की खाद भी

बनाई जाती है। मट्टी के पक्के बरतन बनाने में भी यह काम आती है। चूंकि हड्डी में चूने और फ़ासफ़रस का अंश अधिक रहता है इसलिए वह बतौर खाद भी बहुत फ़ायदा देती है।

Boots (बूट)—बूट। पैर में पहिनने के अंगरेज़ी जूते। यद्यपि विलायती और देशी जूते हिन्दुस्तान में फुटकर बहुत बनते हैं और इसकी फैक्टरियां भी कई एक हैं तौ भी सन १९०९-१० में ३७.३१ लाख रुपए के बूट आए।

Boracic Acid (बोरेसिक एसिड)—सोहागे का तेज़ाब या सत, बोरासिक एसिड यह एक क़िस्म का लवण है जो टस्कनी (Tuscany) देश के झीलों से निकलता है। यह दवा हर साल लगभग ४० लाख रतल तयार की जाती है। खास क़िस्म के कांच बनाने, ज़खम पर बांधने के काम में आती है इस से सोहागा भी तयार होता है। इसे सोहागे का तेज़ाब या सत कहना बेजा नहीं है।

Borax (बोरेक्स) सोहागा, टंकनखार। सोहागे में सोडा और बोरासिक एसिड रहता है। यह देसी बेरेट आफ़ सोडियम (Borate of Sodium) है। तिब्बत के झीलों के किनारे मिलता है, लदाख और काश्मीर के गर्म गंधकी सोतों से निकलता है, ल्हासा से भी सोहागा आया करता है। रंगने में ज़ामिन का काम, छींट छापने में, सोना गलाने में, दवा में सोहागा बहुत काम आता है। मांस पर छिड़क देने से मांस सड़ता नहीं। मीना इसी का कियाजाता है और चीनी के बरतनों पर इसी से शीशे ऐसी चमक दी जाती है। यह तिब्बत से ज्यादा आता है मगर इसकी आमदनी, हर साल घटती बढ़ती है। सन १९०९-१० में १,१२,०००) का सोहागा विदेशों को गया था।

Bort (बोर्ट)—काला हीरा। यह बहुत सख्त होता है और चट्टान वग़ैरा काटने के काम और बर्मा बनाने के काम में लाया जाता है। हकाक लोग भी इसे नग काटने के काम में लाते हैं।

Boxwood (बाक्स उड)—बाक्स उड। यह एक क़िस्म के पेड़की लकड़ी है जिस (Box tree) कहते हैं। इस पेड़की उत्तम जाती Buxus

balearica टरकी और फ़ारस में होती है। इसकी दूसरी जाती हिन्दुस्तान में होती है जिसे Buxus Sempervirens कहते हैं, हिंदी में शंद लघूनी, चिकरी, पपरी, शमशाद वग़ैरा कहलाती है। नैपाल से पूरब सुलैमान पहाड़ और साल्टरेंज व भोटान में पाई जाती है। इसकी लकड़ी चिकनी, बेरेशा, सख्त, बारीक दानेदार और मज़बूत होती है। इस पर नक़्शो निगार, बेल, बूटे, चित्र इत्यादि बड़ी बारीकी के साथ बनाए जा सकते हैं। इंग्रेविंग् (Engraving) के लिए सबसे अच्छी लकड़ी होती है। इस लकड़ी से बाजे (वाद्य) और गणित के यन्त्र बनते हैं।

हिन्दुस्तान में कई क़िस्म के पेड़ होते हैं जिनकी लकड़ी इस योग्य होती है कि वह इंग्रेविंग के काम आसके. इनकी तफ़सील दी जाती है। इनकी परीक्षा की जानी चाहिये।

(१) मालकँगनी [Celastrous Spinosus]
(२) बिल्गू ... [Chloroxylon Swietienia]
(३) ... [Crateagus oxyacantha]
(४) जकामी ... [Dodonia viscosa]
(५) ... [Enonymous Hamiltonianus]
(६) बनपिंडालू ... [Gardenia latifolia]
(७) ... [Hemicyclia sepiarata]
(८) रंगल, कोटागूचल [Ixoria, parviflora]
(९) ... [Allantia Monophylla]
(१०) ... [Lassiococia Symphylleafolia]
(११) कामनी, माधुरी, [Murraya exotica]
(१२) वयू ... [Olea ferruginea]
(१३) अमरूत ... [Psidium Guyava]
(१४) गुले अनार [Punica Granatum]
(१५) चंदन ... [Santalum album]
(१६) इन्द्रजौ शीरीं, दूधी [Wrightia tinctoria]

Bran (ब्रान)—चोकर। गेहूं के आटे का चोकर छीपियों के काम आता

है। ठप्पे का रंग जहां से उठाना होता है वहां का रंग उठाने के काम में आता है। पुलटिस इसकी अच्छी होती है। जिस आटे में से चोकर नहीं निकाला जाता उसकी रोटी जल्द हज़म होती है इसी कारण रोगियां के कामकी चीज़ है।

Brandy (ब्रांडी)—ब्रांडी, शराब। फ्रांस और जरमनी में विशेष करके कशीद की जाती है। जो बहुत उत्तम होती है उसे शाम्पियन [Champagne] और कागनक (Cognac) कहते हैं। सफ़ेद रंगकी वाइन् से उत्तम ब्रांडी और लाल रंगकी वाइन् से घटिया ब्रांडी कशीद की जाती है। वाइन् का कोई रंग नहीं होता, वह निर्मल होती है और कांचके बरतन में स्वच्छ बनी रहती है। किन्तु पीपों में रखने से लकड़ी का रंग लेकर पीले रंगकी हो जाती है। प्रायः इसको रंगीन बनाते हैं।

Brass (ब्रास)—पीतल। तांबे और जस्ते के मेल से यह मिलवां धातु तयार होती है और इसके बरतन वग़ैरा बहुत बनते हैं। कभी कभी इसमें लोहा, सीसा, या रांगे का थोड़े अंश में मेल भी रहता है। साधारणतः ६४ भाग तांबा और ३६ भाग जस्ता मिलाकर पीतल ढाला जाता है। यह धात ढाली जा सकती, मोड़ी और पीटी भी जा सकती है। और खीच कर तार बनता है। बरमिंघम में पीतल तयार करने के बड़े बड़े कारख़ाने हैं। इसके मिलाव में कमी बेशी करने से कई रंगत के पीतल तयार होते हैं। इनमें से ख़ास क़िस्मों के पीतल मुंज़मेटल [Muntz metal] और गेग्ज़मेटल [Gedg's metal] हैं। सब से कड़ा पीतल स्टीरो मेटल [Sterro metal] कहलाता है। जिसमें ५५ भाग तांबा, ४२·४ भाग जस्ता, ०·८ भाग रांगा और १·८ भाग लोहा मिला रहता है। इस देश में पीतल की चद्दरें विदेश से ही आती हैं। हिन्दुस्तान में अब यह बहुत कम ढाला जाता है। पीतल के बरतन, थाली, लोटे, कटोरे, इत्यादि अनेक चीज़े बनती हैं। मुसलमान लोग इसे मकरूह समझते हैं अर्थात इसे अपवित्र मानते हैं बलके मट्टी के बरतन को ज्यादा पसंद करते हैं। दस बारह लाख रुपये का पीतल हर साल विदेश से आता है।

सन १९०८-९ में २४,५७९ हंडरवेट मालियती १३,३८,०००) का और सन १९०९-१० में १६,८०० हंडरवेट मालियती ९,३३,०००) का पीतल आया। पुराने पीतल या पीतल के नकाशीदार गुलदान वगैरा हिन्दुस्तान से लगभग दो ढाई लाख रुपए के बाहर जाते हैं। बनारस के नकाशीदार बर्तन मशहूर हैं।

पीतल जोड़ने या झालने का मसाला—७९ तांबा व २१ भाग जस्ता मिलाकर टांका बनाकर अथवा पानी के साथ सोहागा पीसकर जोड़ पर मल दे और उस पर पतली पत्तियां रांगे की रखकर इतना गरमावे कि सब टिघल जाय तब उसे रगड़ कर चिपका दे।

Brattic Cloth (ब्राटिक क्लाथ)—टाट के थान पर दोनों तरफ टार (अलकत्रा) और उबाले तेल की वारनिश पोत दी जाती है। मेंचस्टर के मार्सडन (Marsden's Factory) फैक्टरी में यह बहुत बनता है।

Brazilian Wax (ब्राज़ीलियन व्याक्स)—यह मोम Wax Palm याने Copernicia Cerifera नामक पेड़ में से निकलती है और थोड़ी आंच में टिघल जाती है।

Brazil Wood (ब्राजील उड)—पतंग लकड़ी, बकम। बक्कम की लकड़ी में से लाल रंग निकलता है। लकड़ी के चूर को उबाल कर इस रंग को निकालते हैं। इस से लाल रोशनाई भी बनाई जाती है। ताज़ी लकड़ी पहिले ज़र्द रंग की होती है पर कुछ हवा खाने पर उसका रंग लाल हो जाता है। यह लकड़ी बहुत सख्त और भारी होती है। पतंग ज्यादातर रंग निकालने के काम आता है। बहुत उमदा रंगवाली पतंग की लकड़ी को Camwood कहते हैं।

Bremen blue, Bremen green——Verditer देखो।

Bricks (ब्रिक)—ईंट, ईंटा। मट्टी की चौकोर मोटी पट्टी बनाकर भट्ठे में पकाई जाती है और इमारत बनाने के बहुत काम आती है। जो ईंटें भट्ठी में लगाने के लिए बनती हैं वह आतशी मट्टी (Fire clay) की होती हैं। इस मट्टी मे चूना और मेगनेशिया का अंश बहुतही कम रहता है या बिलकुल नहीं रहता।

(जिस चिकनी मिट्टी में चूने और बालू दोनों का अंश हो उस की ईंटा बहुत उत्तम बनती है। आजकाल की ईंटा प्रायः ९"×४½"×३ वा १०"×५"×३" नाप की होती है।

Brick Tea (बृक टी)—चाय की टिकिया। चाय को दबाय कर उसकी टिकिया बना ली जाती है। इस का रवाज चीन और रूस में ज्यादा है।

Brimstone (बृम स्टोन)—गंधक। Sulphur देखो।

Bricquettes (बृकेट्स)—कोयले की ईंट। कोयले को पीस कर और उस में थोड़ा सा पिच मिला कर ईंट की तरह बनाते हैं। यह जलाने या ईंधन के काम में लाई जाती है।

Bristles (बृसिल्ज़)—पशुओं के कड़े बालों को ब्रिस्ल कहते हैं खासकर सूअर के कड़े बाल को। यह ब्रश बनाने के काम आते हैं। सूअर के बाल का बड़ा व्यापार होता है। सूअर के बाल हिन्दुस्तान से बहुत रवाना हुआ करते हैं जैसा की इस ब्यौरे से मालूम होगा। परंतु इसमें वह रेशे भी शामिल हैं जिन से ब्रश बनते हैं।

सन्	१९०३-४	में	८३२५८	हंडरवेट	मालियती	२०७६३३१	रूपया
"	१९०४-५	"	८१२९०	"	"	१८३९८५४	"
"	१९०५-६	"	९३८७३	"	"	२१५१०२८	"
"	१९०६-७	"	८८१५८	"	"	१७६८९३०	"
"	१९०७-८	"	...	"	"	१५४४५३५	"
"	१९०९-२	"	...	"	"	२०५२१२१	"
"	१९०८-१०	"	...	"	"	२३१८५३२	"

उत्तम ब्रिस्ल का भाव {२०) से लेकर ९००) मन तक होता है सब से उत्तम बाल रूस से आता है।

Britannia Metal (बृटैनिया मेटल)—यह एक क़िस्म का सुनदर सफ़ेद रंग का मिलवां धातु है। इस में रांगा, तांबा, जस्ता, सुरमा, और विस्मथ (कभी कभी सीसा भी) मिलाकर बनाते हैं)। इसकी

रकाबियां, आबखोरे, चमचे, वग़ैरा सुन्दर बनते हैं। इस पर चांदी का मुलम्मा भली भांति हो सकता है।

British gum (बृटिश गम्)—Dextrine देखो।

Broad cloth (ब्राड क्लाथ)—बानात। एक क़िस्म का ऊनी कपड़ा—यह प्रायः ३० इंच चौड़ा बिना जाता है।

Brocade (ब्रोकेड)—कारचोबी का काम। सुनहैरी या रुपहली कलाबतून से बेल बूटे वग़ैरा बनाए जाते हैं।

Bromine (ब्रोमाइन)—यह लाल रंग का भवतिक पदार्थ है जो पोरे के अतिरिक्त बिना आंच के द्रव बना रहता है और इस में एक बिचित्र प्रकार की दुर्गन्धि होती है और यह जलन पैदा करने वाला विष है। इसके और चांदी के संयोग से ब्रोमाइड आफ सिलवर (Bromide of Silver) बनता है। जिसका बहुत काम फ़ोटोग्राफ़ी में पड़ता है। ब्रोमाइड आफ पोटाशियम (Bromide of potassium) दवा में भी काम आता है।

Bronze (ब्रांज़)—यह भी एक प्रकार का मिलवां धातु वा पीतल है। आज कल जो पैसे बनते हैं उनको ब्रांज कहना चाहिये। पीतल और ताबे के मेल से इसके कई रंग होते हैं।

Brushes (ब्रशेज़)—ब्रश, बुरुश, कूची। ब्रश जानवरों के बाल और और भी कई प्रकार के कड़े सींक या रेशों से बहुत बनते हैं। स्टील और पीतल की तारों का भी बुरुश बनाया जाता है। मशीन वग़ैरा साफ़ करने या और भी अनेक काम में आता है। इसका बड़ा व्यापार है। इसकी मांग दिनों दिन बढ़ती जाती है। अब हिन्दुस्तान में भी इसे तयार करने के कई कारखाने हैं। ब्रश कई काम के लिये बनते हैं जैसे कपड़े का ब्रश (Cloth brush), बाल झाड़ने का ब्रश (Hair brush), जूते साफ करने का ब्रश (Shoes brush), रोगन लगाने का ब्रश (Paint brush), चित्रकारी का ब्रश (Painter's brush), पालिश करने का ब्रश (Polish brush), कूड़ा झाड़ने के ब्रश (Sweeper's brush), दांत साफ करने के ब्रुश (Tooh brush) इत्यादि।

Buckskin (बकस्किन)—भेड़, बकरी और हरन के बनाये-हुये या पक हुवे चमड़े को कहते हैं। एक क़िस्म का ऊनी कपड़े का भी नाम है।

Buckwheat (बकव्हीट)—कोटू, कूट, फफरा। यह हिन्दुस्तान के पहाड़ों में बोआ जाता है। विलायत में इस से बीयर शराब बनती है। प्रायः पशुओं को खिलाया जाता है।

Buffalo Hides (बफ़लो हाइड)—भैंस की खाल। Hides देखो।

Buffalo Horns (बफ़लो हार्न)—भैंस की सींग। हिन्दुस्तान से बड़े बड़े भारी भारी भैंसों की सींगें विलायतों को भेजी जाती हैं, जहां उनसे कंघियां इत्यादि तयार की जाती हैं। इसकी चलान बहुत होती है। अधिक ब्योरा Horn में देखो।

Buffalo Leather (बफ़लो लेदर)—सौथ अमेरिका के भैंसों की खालों को तेल के योग से ही पकाते हैं, कसाव का संयोग नहीं दिया जाता। यह चमड़ा बड़ा मज़बूत और चलाऊ होता है और साथही मुलायम भी होता है। कभी तड़कता या सड़ता नहीं।

Burgundy pitch (बर्गण्डी पिच)—सलई की गोंद, कुन्दुरू या सलई (के पेड़) की राल। इससे रजन (Rosin) और तारपीन बहुत निकाला जाता है।

Butter (बटर)—मक्खन। चौपायों के दूध से जो चिकनाहट या चर्बी का अंश निकलता है उसे मक्खन कहते हैं। प्रायः मक्खन गाय और भैंस के दूध से निकाला जाता है। चिकनाहट के छोटे छोटे दाने बहुत बारीक झिल्ली में बन्द दूध में तैरा करते हैं और दूध के जल से हलके होने के कारण उसके ऊपर तैर आते हैं। मथनी से मथने पर यह झिल्ली फट जाती है और चिकनाहट इकट्ठा हो जाती है, यही मक्खन है।

मक्खन का रंग सफ़ेद या हलका पीला भी होता है, महकने लगता है और खट्टा हो जाता है। यदि मक्खन में थोड़ा नमक, चीनी या शोरा अन्दाज़ से मिला दिया जावे जिसमें स्वाद न बिगड़े तो यह मक्खन बहुत दिनों तक बिगड़ता नहीं। आज काल नक़ली मक्खन बनाते

हैं जिसको Butterine वा Margarine कहते हैं। सब से ज्यादा मक्खन इंगलंड में खर्च होता है।

Butterine (बटरीन)—बनावटी मक्खन। चरबी या मांस के शोरवा को दूध के साथ मिलाकर नक़ली मक्खन तयार किया जाता है। हॉलैंड में इसका कारोबार बहुत होता है। मार्गरीन (Margarine) भी कहाता है। Margarine देखो।

Butter Milk (बटर मिल्क)—मखनियां दूध। मक्खन निकाले हुए दूध को कहते हैं। यह दूध वा मठा जो मथने के कारण कुछ खट्टा स्वाद में हो जाता है बड़े गुण का पदार्थ है। यह दूध से अधिक पुष्ट और जल्द हज़म होने वाला है और कई रोगों को दूर करता है।

Buttons (बटञ्ज़)—बटन, बुताम। बटन कई पदार्थों से बनाए जाते हैं, जैसे सीप, कांच, धातु, कपड़े, लकड़ी, सींग, हड्डी इत्यादि से। बहुत ज्यादा बटन बरमिंघम, फ्रांस, लायन्, और जरमनी के कई शहरों में बनते हैं। सीप वग़ैरा बहुत से पदार्थ जिनसे बटन बनाए जाते हैं हिन्दुस्तान और सिलोन से जाते हैं। किन्तु आश्चर्य का विषय है कि इसका कोई बड़ा कारख़ाना हिन्दुस्तान में नहीं है। इस काम में ख़ासा नफ़ा है। इसके कारख़ाने हिन्दुस्तान में क़ायम होने चाहियें। बम्बई में केवल एक छोटा कारख़ाना है। नारियल के खोपड़े के बहुत उत्तम बटन बन सकते हैं।

Butyric Ether (ब्यूटिरिक ईथर)—मक्खन को पोटाश के साथ मिला कर और अलकोहल में घोल कर गन्धक के तेज़ाब के साथ कशीद करने से यह एसिड तयार होता है और Pine-apple oil याने अनानास का तेल या रोग़न के नाम से बिकता है, इसमें अनानास की सी महक रहती भी है। मिठाई या मुरब्बों में ख़ुशबू के लिये मिलाते हैं और इस से पाइन-एपल एल (Pine-apple ale) नामक शराब भी तयार की जाती है। ख़ुशबू या अतर के मजमूआ में भी यह मिलाया जाता है।

C.

Cable (केब्ल)—लोहे की जंजीर या तार। ज़हाज़ों के लंगर लटकाने वाली जंज़ीर को और समुद्र में विद्युत (बिजली की) तार केबिल कहते हैं लोहे के तारों के रस्से बनाए जाते हैं उसे भी केबिल कहते हैं। सन के रस्से को रोप केब्ल (Rope Cable) कहते हैं।

Cacao, Cacoa (ककों)—यह एक क़िस्म का पेड़ अमेरिका में होता है जिसके फली का यह नाम है। अंग्रेज़ी में कोकोनट (Cocoa-nut) नारियल को कहते हैं। मगर यह कोको (Cocoa) दूसरी चीज़ है, नारियल से इसका कोई संबन्ध नहीं है। इस फल के बीज में रौग़नी माद्दा (अंश) बहुत रहता है और ककोबटर (Cacao-butter) कहाता है। जरमनी में ककोबटर निकालने का बहुत कारोबार होता है। इसके आटे से चोकोलेट (Chocolate) मिठाई बनती है। Chocolate देखो।

Cadmium (क्याडमियम)—यह एक प्रकार का धातु है, जो उस खनिज पदार्थ में प्रायः पाया जाता है जिसमें से 'जस्ता' निकलता है। देखने में वह रांगे की तरह का होता है परंतु रांगे से ज्यादा कड़ा होता है। यह धातु नर्म, फैलनेवाला और तार बनाने योग्य होता है इसलिए जल्द गल जाता है और तेज़ आंच में बल उठता है। यह धातु स्वयं कोई काम नहीं आता, पर कई पदार्थों के मिलाने से दवा या मसाले बनाये जाते हैं। जैसे (Iodide and Bromide of cadmium) आयोडाइड और ब्रोमाइड आफ क्याडमियम)—यह फ़ोटोग्राफ़ी में काम आता हैं। सलफाइड आफ क्याडमियम (Sulphide of Cadmium) इसे क्याडमियम यलो (Cadmium yellow) भी कहते हैं और खासकर मुसव्वरी के काम में बहुत इस्तेमाल होता है, हिंदी में इसे सुनहरा पीला रांग कहते हैं।

Cadmium yellow (क्याडमियम यलो)—Cadmium देखो।

Caffeine (काफ़ीन)—काफ़ीन, कहवा का सत । क़हवा, चाय वग़ैरा का यह एक तत्व या सार है । क़हवा में यह बहुत पाया जाता है । क़हवा या चाय का काढ़ा गर्म जल में बनाकर और उस में असीटेट आफ़ लेड (Acetate of lead) मिलाकर निकाला जाता है । यह सुन्दर सफ़ेद रंग का दुर्रा होता है जो पानी, ईथर या अलकोहल में घुल जाता है और खाने में बड़ा कड़ुवा होता है । इसे हृदय को ताक़त देने के लिए दवा में देते हैं । इसी सार के कारण से ही क़हवा या चाय की इतनी क़दर है । Coffee देखो ।

Cajeput Oil (क्याजीपट आयल)—एक क़िस्म के पेड़ का ख़ुश्बुदार तेल जिसका रंग कुछ हरा होता है । दवा के काम आता है ।

Calambac Eagle (कलेम्बक ईगल)—Eagle wood देखो ।

Calcedony (कलसीडोनी)—Chalcedony देखो ।

Calc Spar, Calcite (काल्क स्पार, क्याल्साइट)—Iceland Spar देखो ।

Calcium (क्यालशियम)—यह एक क़िस्म का धातु है जो खड़िया, चूनेदार पत्थर या संगमर्मर में पाया जाता है । यह धातु अलग नहीं मिलता । दग्ध किए हुवे क्लोराइड आफ़ कालशियम (Chloride of Calcium) में विद्युत (बिजली) का प्रयोग करने से यह धातु अलग हो जाता है । इसका रंग पीलापन लिये हुवे होता है और इस के पत्तर बनाए जा सकते हैं । यह स्वयं कोई काम नहीं देता पर इस के कम्पाउन्ड काम आते हैं । कालशियम भस्म होने पर चूना बन जाता है, इसमें जब कारबन का संयोग होता है तो खली मिट्टी वा खड़िया बन जाता है । इस पृथ्वी में इसका भस्म बहुत पाया जाता है ।

Calomal (क्यालोमल)—रसकपूर, रसकपूर । इसे म्यूरियेट आफ़ मैर्क्यूरी (Muriate of Mercury) (हलका) और सबक्लोराइड आफ़ मर्क्यूरी (Subchloride of Mercury) कहते हैं । यह कइ रीति से तयार होतीं है, इसी से अंग्रेज़ी में इसके कई नाम हैं ।

सलफेट आफ मरक्यूरी (Sulphate of Mercury) को पारे और नमक के साथ मिला कर कड़ी आंच पर बन्द बर्तन में गर्म करते हैं, यह रीति सब से सहज है। यह सफ़ेद रंग का पौडर (चूर्ण) है जो पानी में नहीं घुलता है अलबत्ता एसिडों में कुछ घुल जाता है। पारे के संयोग से जो दवाएं बनती हैं उन में से एक यह बहुत काम की चीज़ है।

Cambrics (क्याम्बृक)—Linen देखो।

Camphor (क्याम्फर)—कपूर, कर्पूर, काफूर। यह कई तरह के पेड़ का ठोस याने जमा हुआ तेल है, लेकिन कपूर (Cinnamomum Camphora) नामक पेड़ से बहुत निकाला जाता है। यह पेड़ चीन और जापान में बहुत पैदा होता है। पेड़ की लकड़ी छोटी छोटी काट कर पानी के साथ बन्द बर्तन में उबाली जाती है और कपूर उड़कर बरतन के ऊपर ढकने में जम जाता है। साफ़ किया हुवा कपूर स्वच्छ, निर्मल, सफ़ेद, नर्म और सुगंधित होता है। कपूर पानी से कुछ हलका होता है और पानी में थोड़ा घुलता है। यह कपूर घुला पानी कर्पूर-जल (Camphor water) कहलाता है। अलकोहल, ईथर, असेटिक एसिड, सिर्का और इसेंशल तेलों में बखूबी घुल जाता है। कपूर खूब बलता है और इसके काजल की सियाही बहुत मशहूर है, इसे इंडियन इन्क (Indian Ink) कहते हैं। इसकी लकड़ी की बड़ी क़दर फ़रनीचर बनाने के लिए होती है। हिन्दुस्तानियों को कपूर का हाल प्राचीन काल से मालूम है। संस्कृत में पक्व और अपक्व दोनों तरह के बने कपूर की रीति मालूम थी। कपूर जिन पेड़ों से निकलता है वह कई जाति के होते हैं और चीन, जापान, कोचीन-चाइना, फ़ारमोज़ा टापू, हिन्दुस्तान, बोर्नियो टापू, सुमात्रा वग़ैरा कई देशों में होता है। इसका व्यापार अधिकतर जापान के हाथ में है। अब बनावटी कपूर भी तयार होने लगा है। हिन्दुस्तान में कपूर बहुत आता है। सन् १९०४-५ में ११,६९,२३८ रतल कपूर कीमती १६,१७,०४३) का और सन् १९०५-६ में ८,४९,२६१ रतल कपूर २२,९९,७८३) का आया। विलायतों में भी यह बहुत जाया करता है।

सन् १९०८-९ में ११,६१,०००) का १०,९३,३६८ रतल

" १९०९-१० में १५,१२,०००) का १४,५७,९१८ रतल आगया ।

हांकांग और जापान देश से बहुत आता है ।

कपूर अनेक काम में लाया जाता है पर अब इस से सेल्लायड (celluloid) बहुत बनाया जाता है । कपूर से कीड़े मकौड़े दूर भागते हैं । इसका धूंवां गंदगी दूर करता है ।

अलकोहल में घुले कपूर को स्पिरिट कामफर (Spirit camphor) कहते हैं । यह उत्तम दवा है ।

Cam wood (क्याम उड)—एक क़िस्म की विलायती पतंग की लकड़ी जिस में से बहुत ही नफ़ीस लाल रंग निकलता है ।

Canada Balsam (कनाडा बालसम्)—कनाडा की बिलसान या राल । वास्तव में तो यह विलसान नहीं है बलके बिलसानी चीड़ (Pinus balsamea) में से निकली हुई एक प्रकार की राल है जो कनाडा के उक्त पेड़ से निकाली जाती है । यह तेल पेड़ के चैले और लकड़ी के मध्य में रहता है जो पछना लगाने पर निकल आता है और कुछ देर बाद जमकर ठस हो जाता है । इसका रंग पीला ज़र्द होता है, महक अच्छी होती है और स्वाद कडुआ । यह राल पार-दर्शक होता है इसलिए कांच पर चीज़ इत्यादि चिपकाने के काम की बहुत अच्छी चीज़ है, क्योंकि इसमें कांचकी तरह स्वच्छता और चमक भी हैं । दूरबीन और खु.र्दबीन के लेन्स (तालों) को जोड़ने के काम में इसे लाते हैं । यदि दो शीशे इस से ठीक तौर से चपका दिये जायं तो एक मालूम पड़ेंगे—

Candle (क्याण्डेल)—मोमबत्ती, (कंडील) । यह मौम, प्यारेफ़िन, खनिज तेल या चरबी की बनी हुई होती है, जिसके बीच में कच्चे सूत की बत्ती बलने को रहती है, अमीर लोग इसे बालकर पढ़ा लिखा करते हैं । इसकी रौशनी ठंढी और हलकी होती है और आंखों पर ज़ोर कम पड़ता है । मंदिरों या पवित्र कामों के लिये शहद की मक्खी के मोम से बनी बत्ती ही काम में लाई जाती है । अब यह बत्तियां

मशीन से तयार होने लगी हैं। बम्बई और मीरठ में अब इसके कारखाने खुले हैं। हज़ारों मन मोमबत्ति बाहर से हर साल आती है। सन् १९०५-६ में १६५३६४६) की और १९०६-७ में १४२०९३४) की मोमबत्ति हिन्दुस्तान में आई। सबसे ज्यादा मद्रास, फिर बम्बे और फिर बंगाल में आती है। आजकल जो मोमबत्ती बाज़ारों में बिकती है वह तीन प्रकार के होती है। (१) व्हेल मछली की चर्बी की बनी हुई, जो देखने में बहुत सफ़ेद और कड़ी होती है। (२) पारा-फ़ीन (खनिज तेल) की बनी हुई इसका रंग सफ़ेद नहीं होता और गरमी पाकर जल्द नरम होकर टेढ़ी हो जाती है। (३) बनस्पती तेल की बनी हुई बत्ती भी सफ़ेद और अच्छी होती है।

Candleberry (कण्डेलबेरी)—मोमिया पेड़ इसे कहना चाहिये। इस पेड़ का फल जब पकनें लगता है तब इस पर सब्ज़ी मायल सफ़ेद रंग की मोम जम जाती है। फलों को उबाल कर मोम अलग कर लेते हैं। फिर गलाकर साफ़ कर ली जाती है। इस मोम से भी मोमबत्ति बनाई जाती है। मगर यह धीमी बलती है और इसमें एक प्रकार की सुगंधी होती है। इस मोम से खुशबूदार साबून भी बनते हैं। यह पेड़ यूनाइटेड स्टेट का है और अब अफ़रीक़ा में भी होने लगा है। इस पेड़ को व्याक्स ट्री (Wax tree), व्याक्स मिर्टल (Wax myrtle), टालो ट्री (Tallow tree) या बे बेरी (Bay berry), भी कहते हैं।

गढ़वाल, कुमाऊं और कांगड़ा में भी एक क़िस्म का ऐसा पेड़ होता है जिसका नाम पीपलयंग, मोमचीना, तारचरबी इत्यादि है। मोम के सिवाय इसकी गुटली से तेल भी निकलता है और छाते की बारनिश इस से बनाई जाती है। इस पेड़ की लकड़ी सफ़ेद और मज़बूत होती है।

Cane (केन)—बेंत। कई क़िस्म के छड़दार घास या पेड़ को कहते हैं। पाम की डंडी को भी केन कहते हैं।

Cannel coal (क्यानल कोल)—coal देखो।

Canthrides (क्यान्थराइड्स)—उन फतिंगों वा गोबरैलो किंवा कीड़ों को कहते हैं जिनसे बदन पर फफोले या छाले पड़ जाते हैं। इस काम के लिए एक तरह का हरा फतिंगा जिसे स्पानिश फ्लाइ (Spanish fly) कहते हैं अंगरेजी दवा के बहुत काम में लाया जाता है। इस कीट को पकड़कर एसिटिक एसिड के साथ बोतल में रखते हैं। सूखी हुई उसकी बुकनी भी काम में आती है। यह जहरीली चीज़ है। सावधानी से काम में लाना चाहिए। चीन और जापान की चन्द मक्खियां भी इस काम में लाई जाती हैं।

Canvas (कनवस)—किरमिज, किर्मिच। यह सन्, पटुआ, सूत वग़ैरा का महीन या मोटा और मज़बूत कपड़ा है। महीन किरमिच पर सूईके काम सोज़नी वग़ैरा बनते हैं और मोटे कपड़े से दलबादल (खेमे वग़ैरा के टोप पानी के बचाव के लिये), पाल, डोल, बकस वग़ैरा भी बनाये जाते हैं। रौग़नी तस्वीर बनाने के काम में भी यह बहुत लाया जाता है और उनके नाप के अनुसार उनके जुदे जुदे नाम हैं। जैसे २८×३६ इंच का टुकड़ा किट-क्याट (Kit-cat) ×३० इंच का टुकड़ा थ्री क्वाटर (Three quarters), ४०×५० इंच का टुकड़ा हाफ लेंग्थ (Half length), ४४×५६ इंची बिशाप्स हाफ लेंग्थ (Bishop's half-length) और ५८×९४ इंचि बिशाप्स होल लेंग्थ (Bishop's whole length) कहाता है। मोटा कनवस ज्यादा तर कसबा फ्लेर्स (Flers) (फ्रांस) में और महीन कनवस मुक़ाम बूवायव (Beauvoiu) और पेरिस (Paris) में बनते हैं।

Caoutchouc (कौचुक)—कच्ची रबड़। यह वस्तु कई तरह के पेड़ में दूध से बनता है। यह दूध सरीखा रस पतला पतला निकलकर सूख जाता है। यह पानी से हलका होता है पर पानी में घुलता नहीं अलबत्ता खास खास मसालों में घुलता है। यह जमकर इतना चिम्मड़ और लचदार हो जाता है कि खींचने से बढ़ता और फिर छोड़ देने पर सिकुड़ जाता है। गंधक के साथ या सलफ़ाइड आफ़ अंटिमनी के साथ मिलाकर गरम करके वल्कनाइज्ड रबर (Vulcanised rubber)

तयार किया जाता है। जब गंधक का अंश ज्यादा मिलाकर और बहुत तेज़ आंच में देर तक तपाया जाता है तब वह एक सख्त चीज़ बन जाती है, जिससे रबड़ की कंघी वग़ैरा कड़ी चीज़ें तयार की जाती हैं। एबोनाइट (Ebonite) या वल्कनाइट (Vulcanite) कहाती है यह रबड़ के खिलौने, गद्दे, नलियां, पाइप, गाड़ी के पहियों के हाल, वाटर-प्रूफ़ कपड़े वग़ैरा बनाए जाते हैं और जो वैज्ञानिक औज़ार सींग वग़ैरा से नहीं बन सकते वह एबोनाइट (Ebonite) से बनते हैं। यह बहुत ही ज्यादा काम की चीज़ है और हज़ारों काम में लाई जाती हैं।

Capers (केपर्स)—कबरां, कौर, कियारी,। यह पौधा अफ़ग़ानिस्तान और अपर इंडिया में होता है। योरोप में इसकी बहुत क़दर है। यह पंजाब में बहुत होता है मगर अब तक वह व्यापार में नहीं लाया जाता। सिके में इसका अचार बनता है और अंगरेज़ लोग इसे बहुत पसंद करते हैं। इसकी खासी तिजारत होती और हो सकती है।

Capsicum (कपसिकम)—लालमिरचा। अंगरेज़ी में इसके कई नाम हैं। जैसे ग्वायना पीपर (Guinea pepper), रेड पीपर (Red pepper), पाड पीपर (Pad depper), चिल्ली (Chilli), कायना (Cayenne), टोबोका (Tobaoca) इत्यादि। इसके पौधे कई प्रकार के होते हैं। मिर्च गर्म मसाले के साथ खाने में डाली जाती है, दांत के दर्द की दवा में मिलाई जाती है और कई तरह की दवा के काम आती है। यह मिर्चा, छोटी, बड़ी, लाम्बी, पकने पर लाल, पीली और कच्चेपन में हरी, काली, कई तरह की होती है। बीज बड़े कड़ुए होते हैं। अंगरेज़ी भाषा में मिरचा के अचार या मुरब्बे को मेक्सिकन चिलीज (Mexican chillies), सूखी पीसी मिरचा को केन पीपर (Cayenne pepper) कहते हैं। मद्रास प्रान्त से खास करके १९·४२ लाख रुपए की मिरचा हर साल बाहर जाती है।

सब से अधिक कड़वी मिरचा लौंगिया मिर्च कहलाती हैं जो लौंग केबराबर होती हैं। पीली मिर्चा लाल मिर्चा से अधिक तीती होती

है और बहुत बड़ी गोल मिर्चा ज़रा भी तीती नहीं होती, यह केवल गमलों में लगाई जाती है।

Caramel (करॅमल)—जब शकर का खूब तेज़ आंच २२० दर्जे की देते है तब स्पंज की शकल की एक काली चीज़ बनती है जिसे करामल कहते हैं। इसका रंग स्याह भूरा होता है। शराब या सिरके में रंग देने के लिए इसका इस्तेमाल होता है।

Caraway (क्यारावे)—स्याह जीरा, काला जीरा, काश्मीर में इसे गुनिपूं कहते हैं। यह अफ़ग़ानिस्तान, बिलोचिस्तान, काश्मीर, चम्बा वग़ैरा में पैदा होता है। गढ़वाल और कुमाऊं के पूरब में भी बोआ जाता है। इसके कई क़िस्म के पौधे होते हैं। इसकी जड़ जंगली सूअर बहुत पसंद करते हैं। काला ज़ीरा को अंगरेज़ी में ब्लाक क्यूमेन (Black cumen) भी कहते हैं। इसका खुशबूदार तेल, साबुन और कई सुगंधित द्रव्य बनाने के काम आता है। खाने के लिए गर्म मसाले में भी इस्तेमाल किया जाता है।

Caraway, European (योरोपियन क्यारावे)—सफ़ेद ज़ीरा। यह हिन्दुस्तान में बहुत होता है। इसका तेल दवा और साबुन में दिया जाता है। इसे कर्वी (Carve) या क्यूमल (Kummel) भी कहते हैं। यह खाने में अधिक इस्तेमाल किया जाता है।

Carbolic acid (कारबोलिक एसिड)—इसे फ़ेनोल (Phenol) भी कहते हैं। यह कोलटार से तयार होता है। यह जख़म या घाव को सड़ने नहीं देता। गंदी हवा को दूर करता है। इसका टुर्रा सफ़ेद होता है जो गर्मी से पिघलकर तेल की तरह पतला हो जाता है। यह जहरीली चीज़ है।

Carbonate of Soda (कारबोनेट आफ़ सोडा)—Soda, Carbonate देखो

Cardamum (कारडेमम्)—इलायची। यह दो तरह की होती है (१) बड़ी इलायची और (२) छोटी इलायची। इसका पौधा कनारा, मैसूर, कुर्ग, ट्रावंकोर, बीनाड़ और मदुरा के पहाड़ में अच्छी ज़मीन पर पैदा होता है। यह हर साल दो लाख रुपए के लगभग की विदेशों

को चलान हुवा करती है। सिलोन से भी लाखों रुपए की इलायची हिन्दुस्तान में आती है। इसकी सब से बड़ी मंडी बम्बई और मद्रास में है। ४,५८,०००) की इलायची सन् १९०९-१० में हिन्दुस्तान से बाहर रवाना हुई।

Carpets (कारपेट)—क़ालीन, गलीचा, दरी, शतरंजी, ऊनी गर्भ सूती रोएंदार फ़र्श को क़ालीन कहते हैं। बिना हुआ सूती फ़र्श जो खूब मोटे सूत से बिना हो दरी कहलाती है। फ़ारस और हिन्दुस्तान के क़ालीन सदा से मशहूर होते चले आए हैं। टरकी में भी क़ालीन तयार किए जाते हैं। अमृतसर, लाहौर, मुलतान, होशियारपुर, बटाला, भावल पुर, कोहाट, बन्नू, काश्मीर, पेशावर में इसके बड़े बड़े कारखाने हैं। संयुक्त प्रांत में, मिर्ज़ापुर, आगरा, झांसी, जबलपुर, और इलाहाबाद में भी तयार किए जाते हैं। इन में से मिर्ज़ापुर के क़ालीन और आगरे की दरियां ज्यादा मशहूर हैं। सूबा मद्रास के ज़िला मसूली पट्टम और मालाबार में भी पहिले क़ालीन अच्छे बनते थे। इस देश में क़ालीन प्रायः ऊन, सूत, रेशम और जूट के बनते हैं।

Carrara Marble (करारा मार्बुल)—करारा के संगमर्मर। यह उत्तम पत्थर है। मूर्तियां प्रायः इस की बनाते हैं। यह इटली देश के खानों में से निकलती हैं।

Carve (कार्व)—Caraway देखो।

Cassava (कसावा)—Manioca देखो।

Cashew Nut (क्याशू नट)—काजू, हिजली बादाम। हिन्दुस्तान के दक्खिन भाग में समुद्र के किनारे रेत में पैदा होता है। इस की गोंद की महक से कीड़े भाग जाते हैं। इस की छाल से तेल निकलता है, जिसे हिन्दुस्तानी में "दिक" कहते हैं। इसके फल की गिरी भून कर खाई जाती है। मग्ज़ का तेल बादाम के तेल की तरह अच्छा होता है मगर छिलके का तेल कड़आ होता है। फ़रनीचर या किताबों पर लगाने से दीमक इत्यादि कीड़े नहीं लगते।

Cashmere (काश्मीर)—कश्मीरा, काश्मीरा, काश्मीरी शाल। काश्मीरी भेड़ों के ऊन का कपड़ा। यह कपड़ा क़ीमती होता है और पहिले इसकी क़दर थी पर अब उतनी नहीं रही, बल्के घटती जाती है। काश्मीर के शाल दुशाले अब भी मशहूर हैं और उस पर बड़े दीदारेज़ी से दस्तकारी के काम बनते हैं।

Cast Iron (कास्ट आयर्न)—Iron देखो।

Cassia Bark (केशिया बार्क)—चिनिया दारचीनी। यह छाल दारचीनी की तरह मंहक देती है। चीन देश से आती है।

Castor oil (कास्टर आयल)—रेंड़ी का तेल। अरंड या रेंड़ी के बीए से निकला हुआ तेल। हिन्दुस्तान में बेहद होता है। रेंड़ी को कूटकर 'प्रेस' से दबाकर तेल निकालते हैं। इस तेल को पानी के साथ उबाल कर साफ़ करते हैं। साफ़ तेल का रंग हलका पीला होता है और मामूली मैले तेल का रंग कुछ हरा या भूरा होता है यह बहुत गाढ़ा होता है यह तेल दस्तावर होता है इसलिए इसकी बड़ी क़दर है। साबून भी इस से बनता है। टर्की रेड आयल (Turkey-red oil) कपड़ा रंगने के लिए इस में अच्छा बनता है। इसकी खली बहुत अच्छी खाद है और जहां कोयले कम मिलते हैं वहां इसी से गेस भी तयार की जाती है। इसकी रोशनी साफ़ होती है और बालने के काम में इसका तेल बहुत इस्तेमाल किया जाता है।

Catechu (कटेचू)—खैर, कथ, कत्था, कत्थसार, खैरसार, कत्थे का कसाव। चमड़ा पकाने और रंगने में बहुत काम आता है। खैर की लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े करके उबालते हैं जब गाढ़ा रस निकल आता है तब गड़हों में या सांचों में डालकर सुखा लेते हैं। यही कत्था है जो बाज़ार में बिकता है। हिन्दुस्तान में पानके साथ खाया जाता है। इसका रंग पुख्ता होता है। यह हरसाल लगभग ६--७ लाख रुपये का चलान होता है। हर साल इसकी चलान कम होने लगी है जैसा कि नीचे के ब्योरे से प्रगट होगा :—

सन् १९०७-८ में १४,४७,५८१) का ९१,६९० ह०
१९०८-९ में ९२,५,२४२) का ६२,८१२ "
१९०९-१० में ६,७४,०८६) का ४०,७१२ "

Catgut (क्याटगट)—तांत। भेड़ की आंत और कभी कभी घोड़े, गदहे या खच्चर की भी आंतों को साफ़ करके और सुखा कर तांत तयार करते हैं। सबसे उमदा तांत इटली में बनाई जाती है। बाजों में लगाते हैं। टेनिस ब्याट बिने जाते हैं, और भी कई काम में लाई जाती है।

आंत्तों की रवानगी के बाबत मिस्टर विलसन साहब डाइरेक्टर आफ़ इंडस्ट्रीज़, संयुक्त प्रान्त, ने एक गश्ती चिट्ठी आंत्तों के व्यापारियों के हितार्थ छापी थी उसकी नक़ल नीचे दी जाती है:—

यादद्दाश्त बाबत इस्तेमाल साहबान हुक्काम ज़िला व कराये जाने गश्त इलाक़ाजात में व नीज़ दीगर अशखास मुतअल्लिक़ा के मिन्जानिब साहब डाइरेक्टर बहादुर, मुहकमा सनअत व हिर्फ़त मुमालिक मुत्तेहदा—कानपुर।

सूखी आंतों की सौदागरी (हैवानात की आंतें)।

तहक़ीक़ात से यह बात मालूम हुई है कि क़स्साब (क़साई) और दीगर अशख़ास इस सौदागरी को अभी तक अच्छी तरह नहीं जानते हैं और यह लोग आम तौर पर ताज़ी आंतों को अर्ज़ां (सस्ती) शरह क़ीमत पर फ़रोख्त कर देते हैं (या बिलकुल फेंक देते हैं) जब कि उस की क़ीमत लंडन में इस बात को ख्याल करके कि वह साफ़ व खु.श्क ठीक तौर पर मुरत्तब (तयार) की जावे मुबलिग़ १०) फ़ी सेर से कम नहीं है। चन्द मुक़ामी बाज़ारों को इलाहदा करके, मसलन् मद्रास और स्यालकोट की बाज़ारें, हमको हिन्दुस्ताम में इनके सिवाय कोई और बाज़ार खुश्क आंतों का मालूम नहीं होता है और हमारा यह मक़सद है कि इस शै की मुक़ामी खरीद व फ़रोख्त करनेवालों को सबसे नज़दीक के मशहूर कारख़ाना से बराहे रास्त कार्रवाई करने की इत्तिला दें। यह कारख़ानाजात उनके माल को बख़ूबी खरीदेंगे और उसकी क़ीमत तजवीज करके

मुवाफ़िक़ क़ीमत माल के फ़ौरन अदा करेंगे इस क़िस्म के खरीदारान् के नाम हम बखु.शी बतला देंगे अगर हम से दर्याफ्त किया जावेगा।

इस माल की सौदागरी क़ीमत में बढ़ रही है और वजह इसकी यह है कि खेलों के काम में फ़िलहाल इसका बहुत खर्च है (जिसमें कि उड़नेवाले जहाज़ भी शामिल हैं) और गांवों का क़स्साब उसके बनाने का तरीक़ा जो बहुत आसान् है बख़ूबी समझ सकता है। हमारी राय में इस कार्रवाई से और बाजार में माल के बिकने से सौदागरी उसके क़ब्जे में रहेगी और जिस क़दर कि वह माल रवाना करेगा उसकी क़ीमत फ़ौरन मिल जावेगी। यह क़ीमत वह होगी जिसका तखमीना बाहर को भेजनेवाला एजंट करेगा।

हैवानों (पशुओं) की आँतें।

जानवर के पेट से निकलते वक्त ही उसको लेकर उसकी सब चरबी छील डालनां चाहिये और फुज़ला (छीछड़े) और मैला साफ़ कर देना चाहिये। इसके बाद उसे साया में खुश्क करनी चाहिये (यानी धूप में नहीं बलके इस तरह पर खुश्क किया जावे कि मक्खियां न लगने पावें) और मुन्दर्जा ज़ैल तरीक़ा में उसको बांध देना चाहिये (लेकिन उस वक्त तक न बांधी जावे जब तक कि ख़ूब खुश्क न हो जावे)

आंतों को काटना नहीं चाहिये और न उनको ज्यादा छीलना चाहिये कि खराब हो जावें।

भेड़, बकरी, बकरा और उनके बच्चों की आंतें।

बाद साफ़ करने के उनको लम्बाई में फाड़ देना चाहिये यानी सीधी फाड़ को फैलाकर एक लकड़ी के तख्ते पर लगाकर खुश्क करना चाहिये, जिस क़दर लम्बे टुकड़े हों उसी क़दर बेहतर हैं और चार गज़ से कम का टुकड़ा नहीं भेजना चाहिये।

मवेशियों की आंतें।

बाद साफ़ करने के जिस क़दर लम्बी हो सकें उनके एक किनारे को बांध कर दूसरे किनारे से उनमें हवा भरकर बांध देनी चाहिये

ताकि बिला चिपटे हुये सूख जायं। ग़रज हवा भरने की यह है कि वह चिपटेंगी नहीं और जब सूख जांय तो हवा निकाल देना चाहिये। मवेशियों की आंतों में आंतों के साथ नमक भी डालना चाहिये। पेश्तर इसके कि उसके बंडल बनाये जांय उनमें नमक खूब लगाना चाहिये। लेकिन सबसे बेहतर तरीक़ा सबसे ज्यादा क़ीमत हासिल करने का यह है कि उनको एक बंद सन्दूक़ या छोटी कोठरी मे रखकर पेश्तर बांधने के १२ घंटा तक गंधक का धूँआं देना चाहियें जब खूब खुश्क हो जावें तो उनको सन्दूक़ों में, कि जिनके अंदर काग़ज़ लगा हो और जिन में बहुत खुश्क नीम की पत्तियां या शाखें पड़ी हों ताकि कीड़ा न लगने पावे, रखना चाहिये। हर सन्दूक़ या बकस मे १०० गज़ लम्बी आंतों के टुकड़े होने चाहियें और २०० गज़ आंत को फैलाकर लपेट लेना चाहिये और इस क़िस्म के लपेटे हुये पुलिण्डे ५० फ़ी बकस रखना चाहियें॥ यह भी तजवीज किया जाता है कि जमाअत इमदाद क़र्ज़ा देहाती क़स्साबान् को उनके माल की क़ीमत पेश्तर से दे दे और माल भेजकर जो क़ीमत बाज़ार की हो वह भेजनेवाले को मिले।

हस्ब ज़ैल सौदागरान् तयार हैं कि जिस क़दर खुश्क आंत उनके पास भेजी जावेगी उसकी क़ीमत तजवीज़ करके मुवाफ़िक़ क़ीमत माल के रुपया फ़ौरन अदा करेंगे।

(1) Messrs. Robinson Morrison & Co.,
5, Commercial Buildings, Calcutta.

(2) „ G. Atherton & Co.,
14, Clive street, Calcutta

(3) „ Alois Schweiger & Co., Ltd,
23, Esplanade Road, Bombay.

——:o:——

Cavendish (कवेंडिश)—एक प्रकार का तमाखू जो जूसी वग़ैरा में मिलाकर तयार होता है। इसे नीग्रोहेड (Negrohead) भी कहते हैं। इंगलैंड में इसका बड़ा व्यापार होता है।

Caynne—Capsicum देखो।

Cedar (सिडार)—तुन। यह पेड़ हिमालय की तराई, शिकिम और आसाम के पूरब में होता है। इसकी लकड़ी सुर्ख, मज़बूत और बे गांठ की होती है। यह लकड़ी पेंसिल बनाने के काम बहुत आती है और इसके सिगार के बकस भी बहुत बनते हैं, यह तुन (Cedrela toona) जाति का पेड़ है। अंगरेज़ी भाषा में इसे तुन (Toon), इंडियन मेहोगनी (Indian Mahogany), मोल्मेन सेडार (Moulmein cedar) भी कहते हैं।

दूसरी क़िस्म इसकी (Cedrus Libani or The Himalayan Cedar) है जिसे देवदार, दियार, केलू, वग़ैरा कहते हैं। अफ़ग़ानिस्तान की सरहद से कुमाऊं में दौली नदी तक पाया जाता है। इसकी लकड़ी मज़बूत होती है और इसका बड़ा गुण यह है की इसमें दीमक नहीं लगती इसका पेड़ ३० से ४५ फुट तक मोटा और १०० से २४० फुट तक ऊंचा होता है। यह लकड़ी बहुतही चिरस्थाई होती है, यहां तक कि ६०० और ८०० बरस तक की लकड़ी इमारतों में लगी देखी व पाई जाती है, जो ज़रा भर भी नहीं गली। यह बड़ी उत्तम लकड़ी है। इसमें से तेल भी निकलता है जो हिन्दुस्तानी भाषा में 'कोलेन का तेल' कहलाता है इसका बहुत खुशबूदार हिस्सा भद्रकाष्ठ या सनोबेर-हिन्द कहाता है और गठिया या फ़ालिज की बिमारी में काम आता है। कहा जाता है कि इसके तेल से वारनिश उमदा बन सकती है। इसकी जांच करनी चाहिए।

Celary (सेलरी)—अजमोद, धनियां, करफ़श, शलेरी। इस की हरी जड़ और पतियां पकाकर या कच्ची खाई जाती हैं। इसकी जड़ सुखा कर गठिया की दवा में दी जाती है और इसके बीए पुष्टिकारक और वृषल होते हैं।

Celestine, Celessite (सेलेस्टाइन, सेलेस्टाइट)—यह खनिज पदार्थ है। इसे सल्फेट आफ स्ट्राण्टियम् (Sulphate of Strontium) भी कहते हैं। यह पदार्थ हिन्दुस्तान में सिंध के किनारे के कंकर या पत्थर

में मिलता है और 'साल्ट रंज' में सुरदम मुक़ाम की लाल मिट्टी में भी पाया जाता है। योरोप में पहिले चूने की जगह Strontianite (Carbonate) ही शक्कर साफ़ करने के लिये इस्तेमाल होता था। यह द्रव्य विदेश से आता है और आतशबाज़ी में लाल रंग पैदा करने के लिए काम आता है। सिसिली में यह द्रव्य उमदा मिलता है।

Celluloid (सेल्लूलायड)—इसे पार्केनसाइन (Parkensine) भी कहते हैं। क्योंकि पहिल पहिले सन् १८५६ में Parkes साहब ने इसके बनाने की तरकीब निकाली थी। यह नक़ली हाथीदांत की तरह की एक चीज़ है जो कइ मसालों से बनती है। इसमें पारोक्ज़ाइलन Pyroxylon (सूखा gun cotton=गन काटन) और तेल या कपूर मिला रहता है। रूई को शोरे और गंधक के तेज़ाब में भिला कर Nitro-benzole में घुला देने से Pyroxylon बनता है। इसे रेंड़ी के तेल या बिनौले के तेल के साथ लेई सरीखा तयार करते हैं। ८०० डिगरी की गरमी में यह इतना मुलायम रहता है कि इसे जिस शकल का चाहे बना लें। सलफाइड आफ लाइम या बाइ सलफेट आफ कारबन (Sulphate of lime or Bisulphite of carbon) में तर करते हैं। जिसमे उसमे का मुलायम रखने वाला मसाला अलग हो जाता है। सेल्लूलायड आग मे जल्द बल उठता है और पीले रंग की रौशनी होती है और कपूर की सी महक देता है। इसलिए इसे तुंगस्टेट आफ सोडा (Tungstate of Soda) वग़ैरह से उस की दहन योग्यता कम कर लेते हैं। पानी का असर इस पर नहीं होता। इस से बटन, डिबिया, ब्रश के दस्ते, छाते के दस्ते, कंघी वग़ैरा ऐसी चीज़ बनाई जाती है जो हाथीदांत से बन सकती हैं। देखने में इसकी चीज़ें हाथीदांत की सी बने मालूम देती हैं। रंग मिला कर नक़ली मूंगा वग़ैरा कई चीज़ें इस से बनाते हैं।

Cellulose (सेल्लूलोज़)—उद्भिज पदार्थ का यह मुख्य अंश है। जिसे पेड़ों के रेशों की बनावट होती है। कपास, रूई और कागज़ में बहुत रहता है और इन वस्तुओं को शोरे और गंधक के तेज़ाब

में संयोग करने से (Gun Cotton) गन कटन वा Pyroxylin पाइलोक्ज़ाइलन क़ीमती द्रव्य बनता है।

Cement (सीमंट)—सिमेंट, गारा, जोड़ने का मसाला, टांका। जब किसी दो चीज़ों को जोड़ना होता है तो जिन मसालों से वह जोड़ी जा सकती है या जोड़ी जाती हैं उन्हें सीमेण्ट कहते हैं। हमारे देश में धात जोड़ने के मसाले को टांका, इमारती जोड़ने के मसाले को गारा इत्यादि भिन्न भिन्न नाम से बोलते हैं।

आम तौर से मामूली चीज़ें जोड़ने में सरेस, लाह, गोंद और लेई बहुत काम आती हैं। जो चीज़ जोड़नी होती है उसके जुड़नेवाली भाग को गरम रखना चाहिए और गरम गरम मसाला लगाकर ठंडा होने के पहिले ही मिला कर जोड़ देना चाहिए। राल या लाख से जुड़ने वाला भाग ज्यादा तपा रहना चाहिए, जैसे चीनी के बरतन जोड़ने में उसे इतना तपा लेना चाहिए कि लाख उस पर लगतेही टिघलने लगे और गर्म गर्म ही जोड़ देने से फिर जोड़ इतना मज़बूत हो जायगा कि वहां से वह जल्दी न उखड़ेगा चाहे दूसरी जगह से टूट जाय। अनजान आदमी प्रायः उतनी आंच देकर नहीं जोड़ते जितनी दरकार होती है इसीलिए उनका लगाया जोड़ कमज़ोर या कच्चा पड़ता है।

भिन्न भिन्न काम के भिन्न मसाले होते हैं। ज़रूरी काम के चंद नुसखे नीचे लिख दिए जाते हैं:—

(१) पानी में की चीज़ जोड़ना—(क) २½ छटांक प्लारटार आफ़ पेरिस, २½ छटांक मुर्दासंख, २½ छटांक सफ़ेद बालू, पौन छटांक राल खूब मिलाकर बोतल में बंद करके रक्खे। जब ज़रूरत पड़े तब उबाले हुए अलसी के तेल और 'ड्रायर्ज़' (Driers) में मिलाकर फ़ौरन काम में लावे, क्योंकि यह जल्द सूख जाता है। (ग) उबाले हुए अलसी के तेल में मुर्दासंख, सफ़ेदा और सेंदुर मिलावे (सफ़ेदा का भाग ज्यादा रहे)। इसे फ़लालैन पर फैलाकर जोड़ पर लगा दे।

(२) जेवेलर सीमेंट (जौहरियों के काम के)—बड़े मटर बराबर के ५ या ६ दाने मस्तगी को उतने स्पिरिट में तर करे कि जिसमें वह बखूबी घुल जाय। दूसरे बरतन में 'आइसिन-ग्लास' (Isinglass) को, जो पहिले पानी में भिगा कर मुलायम कर ली गई हो, 'रम' या दूसरी शराब में इतना घोल ले कि २ औंस की शीशी भर जाय और इस से दो छोटे टुकड़े 'गम अमोनिएकम' (Gum Ammoniacum) को घिस कर मिलावे। फिर काफ़ी आंच पर उक्त दोनों मसालों को मिला ले और खूब बंद करके बोतल में रख छोड़े। काम में लाने के पहिले उबलते पानी में शीशी रखकर मसाला पतला कर ले। इस मसाले से सब तरह के (धातु के) पदार्थ जुड़ जाते हैं यहां तक कि स्टील के साथ कांच तक जुड़ जाता है।

(३) एसिड-प्रूफ सीमेंट (जिस पर तेज़ाब का असर न हो)—सिलिकेट आफ़ सोडा (Silicate of Soda) को गाढ़ा तयार कर फिर इसमें पीसा हुआ कांच मिलाकर लेई की तरह बना ले। यह बड़े काम का सीमेंट है।

(४) चाकू को बेंट या दस्ते में जोड़ना—(क) ४ भाग राल, १ भाग मोम, १ भाग ईंट का चूरा या प्लास्टर आफ़ पेरिस मिलाकर दस्ते के छेद में भर कर और बेंट को तपा कर छेद में डालने से पकड़ लेगा। (ख) १६ भाग राल और १६ भाग गर्म गर्म बारीक खड़िया, १ भाग मोम। (ग) ४ भाग पिच, ४ भाग राल, २ भाग चरबी, २ भाग ईंट का चूर।

(५) सीप या हाथीदांत जोड़ना—१ भाग आइसिनग्लास, २ भाग सफ़ेद सरेस (White glue) ३० भाग पानी में घोल कर उबाले जब ६ भाग रह जाय तब $\frac{1}{30}$ भाग मस्तगी को $\frac{1}{2}$ भाग अलकोहल मिलाकर और १ भाग सफ़ेदा सहित उसमें मिलावे। गर्म करके काम में लावे।

(६) पत्थर के सीमेंट—१ भाग काली राल, २ भाग ईंट का चूरा। खूब गलाकर मिलावे।

(७) खरादी के सीमेंट—(क) २ रतल पिच, ९ रतल राल, २ औंस जर्द मोम, २ रतल खड़िया महीन गलाकर मिलाले।

(ख) ½ रतल राल, १ औंस जर्द मोम गलाकर टीन के कनिस्टर में ढाल लें जितनी ज़रूरत हो उसमें से उखाड़ ले।

(८) स्थितिस्थापक वाला (Elastic) सीमेंट—बाई सलफ़ाइड आफ़ कारबन (Bisulphide of Carbon) ४ औंस, इंडिया रबड़ के खूब महीन टुकड़े १ औंस, आइसिनग्लास २ ड्राम, गट्टापरचा ½ औंस मिला ले। इस से चमड़ा और रबड़ जोड़ी जाती है।

(९) इंडियनाइट (Indianite) सीमेंट—(क) १०० भाग क़ीमा की हुई रबड़, १५ भाग राल, १० भाग लाख इन्हें बाइसलफ़ाइड आफ़ कारबन में घुला ले।

(ख) इंडिया रबड़ १५ ग्रेन, क्लोराफ़ार्म २ औंस, मस्तगी ½ औंस। पहिले रबड़ को घुलाकर तब मस्तगी घुलावे और एक सप्ताह तक पड़ा रहने दे।

(१०) चाइनीज (Chinese) सीमेंट—निहायत उमदा ज़र्द लाख का चूरा ४ औंस, रेक्टीफ़ाइड स्पिरिट (५८ O. P.) ३ औंस बोतल में बंद करके गरम जगह में रख कर घुलने दे। इसे शीरे की तरह गाढ़ा होना चाहिए। इस मसाले से लकड़ी, कांच, हाथीदांत, ज़वाहिरात इत्यादि जोड़े जाते हैं।

(११) धातु, या कांच व लकड़ी के सीमेंट—(क) राल गलाकर प्लास्टर भस्म (calcined plaster) मिलावे और उबाल कर गाढ़ा कर ले।

(ख) १८० भाग राल, जला हुआ अम्बर (umber) ३० भाग, प्लास्टर भस्म १५ भाग और उबाला हुआ तेल ८ भाग। इस मसाले को गर्म गर्म लगाकर जोड़े।

(१२) संगतराशों के सीमेंट—नदी का साफ़ बालू २० रतल, मुर्दासंग २ रतल, चूना १ रतल, अलसी के तेल में मिलाकर लेई सा बना लेवे। इस मसाले से कुछ दिन बाद जोड़ पत्थर सरीखा हो जाता है।

(१३) इंजीनियर्ज़ सीमिंट—(क) सफ़ेदा और सेंदूर मिला कर पेटीन बना ले।

(ख) सफ़ेदा और सेंदूर सम्भाग और अलसी का तेल।

(१४) लोहा जोड़ने का सीमेंट—(क) १ रतल साफ़ रेता हुआ लोह-चुन हावनदस्ता में खूब रगड़ कर बारीक पीस ले फिर २ औंस नौसादर सफ़ूफ़, १ औंस गंधक मिला कर रख ले। जब दरकार हो १ भाग ऊपर वाला मसाला और २० हिस्सा लोहचुन जल में गूंध ले।

(ख) २ रतल साफ़ लोहे का चूरा, २ औंस गंधक, १ औंस नौसादर का सत्त (Sal ammonia)

(ग) ९८ भाग लोहे का चूरा छाना हुआ, १ भाग गंधक, १ भाग साल अमोनिया।

(१५) लोहे का घट जोड़ना या मरम्मत करना—२ भाग गंधक, १ भाग ग्राफ़ाइट (Black lead)। पहिले गंधक को आंच पर गला कर तब सीसा मिला ले और पत्थर पर ढाल कर ठंडा कर ले और कूट कर रख ले। जब ज़रूरत पड़े तब इस में से मसाला ले कर टूटी जगह रख कर तपे हुए लोहे यानी कैय्या से टांका लगा दे। अगर छेद बड़ा हो तो एक कीली उसमें भर कर उक्त मसाले का टांका लगावे।

(१६) लंडन सीमेंट (कांच, काठ, चीनी का बरतन वग़ैरा जोड़ना)—ग्लूसिस्टर की पनीर (Gloucester's cheese) थोड़ी सी लेकर उसके तिगुने पानी में इतना उबाले कि पानी बिलकुल जल जाय। इस प्रकार तीन बेर करे फिर उस लसदार पदार्थ में सूखा चूना मिला कर काम में लावे।

(१७) आर्किटेक्चरल (दस्तकारी की) समिंट—चावल की गाढ़ी मांड़ी और उबाले हुए पानी में कागज़ का गूदा भीगा हुआ और बारीक़ खड़िया मिलाकर काम में लावे।

(१८) केमिकल समिंट—५ रतल राल, १ रतल मोम, १ रतल गेरू, २ औंस प्लास्टर आफ़ पेरिस, इन सब को साधारण आंच पर

टिभला और मिला कर काम में लावे। इस से बिजली की मशीनें और औज़ार जोड़े जा सकते हैं। यह उमदा सीमेंट है।

(१९) फटी लकड़ी के दर्ज़बंदी का सीमेंट—(क) १ भाग सरेस को १६ भाग पानी में आंच पर घुलावे, उतार कर जब कुछ ठंढा हो जाय तो उसमें लकड़ी का बुरादा बखूबी मिलादे।
(ख) बारनिश के तेल में सफ़ेदा, सेंदुर, मुर्दासिंग और खड़िया मिलाकर काम में लावे।
(ग)—१ भाग बुझा चूना और २ भाग देवगंदुम का मैदा मिलाकर काफ़ी ज़ीतून के तेल में पोटीन तयार करले।

(२०) पत्थरों का सीमेंट—१ भाग स्याह रजन और २ भाग ईंटे का चूरा दोनों को खूब मिलाकर और तेज़ आंच में गलाकर काम में लावे।

(२१) संगमूसा जड़ने का मसाला—काले नग या संगमूसा जड़ने के लिये सबसे अच्छी चीज़ लाह है। लाह को धुआंस देने से लाह भी काली हो जायगी और तब दोनों का एक रंग हो जायगा।

(२२) रस्ट जायंट सीमेंट—रस्ट सीमेंट (Rust cement) को कास्ट आयर्न सीमेंट (Cast iron cement) भी कहते हैं। इस मसाले से ढले लोहे की चीजें जोड़ी जाती हैं या उनकी दर्ज-बन्दी की जाती है, इस काम को अंगरेज़ी में (Caulking the joints of cast iron) कहते हैं।

इसके मसाले के लिये जो लोहचुन लिया जाय वह ढले लोहे की खराद का ही चूरा होना चाहिये। ऐसे लोहचून को कूट कर चलनी में छान लेना चाहिये। फिर निम्न-लिखित मसालों को मिलाकर और तर करके फ़ौरन आंच पर चढ़ा दिया जाय और बखूबी घोलकर पानी से भरा रखे—
(क) जल्द सूख जाने वाला मसाला—१ भाग साल अमोनिया (तौल कर), २ भाग गंधक का फूल और ८० भाग लोहचुन।
(ख) देर में सूखनेवाला मसाला—२ भाग साल अमोनिया, १ भाग गंधक का फूल और २०० भाग लोहचुन।

याद रहे कि यह पिछला मसाला सब से अच्छा है मगर देर में सूखता है। साल अमोनिया की जगह पर पशुओं का मूत भी काम दे सकता है।

(२३) बोतलों के मुंह बंद करने का सीमेंट—पिच से रजन और ईंट का चूरा मिला कर कड़ा कर ले।

(२४) अक्वेरियम (ऐसे कांच के केस जिन में पानी भरा रह सके) के सीमेंट—(क) १ सेर प्लास्टर आफ पेरिस, १ सेर मुर्दासंग, १ सेर सफ़ेद साफ़ बालू, $\frac{1}{3}$ सेर बारीक राल। इनको मिला कर बंद बोतल में रखे रहे और जब ज़रूरत पड़े तब थोड़ा थोड़ा निकालकर उबाले हुये तेल और जल्द सूखने वाले मसाले में गूंध कर झट पट काम में लावे।

(ख) उबाला हुआ अलसी का तेल, मुर्दासंग, सेंदुर और सफ़ेदा मिलाकर फलालैन पर फैलावे और जोड़ पर चिपका दे इस में सफेदा का भाग ज्यादा रहे।

(ग) ८ औंस रबर घुली हुई, १ औंस वेनिस की टारपीन। इन दोनों को एक में खूब उबाले और घोलता रहे कि दोनों एक दिल हो जांयं। फिर जोड़ पर लगाकर एक दिन रात सूखने दे।

(२५) रबड़ सीमेंट—कच्ची रबड़ को गीले तेज़ छुरी से पतला पतला छील डाले फिर कैंची से पतली पतली तारें काट ले। फिर एक बड़े मुंह के बोतल में लगभग तीन चौथाई उमदा बेनज़ीन (Benzine) भर कर उसमें थोड़ी से रबड़ की तारें (लग भग बोतल के $\frac{1}{40}$ भाग में आने लायक़) डाल दे। वह फ़ौरन फूल उठेंगी और कुछ दिनों में शहद की तरह गाढ़ी हो जायंगी। अगर वह ज्यादा पतली रहे तो थोड़ी रबड़ और मिलाले और अगर ज्यादा गाढ़ा मसाला हो जाय तो अन्दाज़ से थोड़ा बेनज़ीन मिला दे। इसका लेप फ़ौरन सूख जाता है और तीन लेप काफ़ी होता है। अखरोट बराबर रबड़ से १ पाइंट भर मसाला तयार हो सकता है। इस

से चमड़े की पट्टी या तस्मा, रबड़ की चीज़ें, जूते, इत्यादि अनेक चीज़ें जुड़ सकती हैं।

Cement, Portland (पोर्टलेंड सीमेंट)—विलायती मिट्टी के नाम से यह मशहूर है। यह एक प्रकार का गारा है, जो गारा पानी में सख्त हो जाता है उसे हाइड्रोलिक सीमेंट (Hydraulic cement) वा पोर्टलांड सिमेन्ट कहते हैं। यह ऐसे मसालों से तयार होता है जिसमें १० से २५ फ़ी सदी तक अलूमिना, मेगनीशिया और सिलीका हो। यह बनावटी भी होता है। ६५ से ८० हिस्से तक खड़िया या चूना, २० से २५ फ़ी सदी तक नदी की चिकनी मट्टी या गादा, और ३ से १४ फ़ी सदी तक मोरचा या लोहचून मिलाकर पानी के साथ कूटते हैं। फिर सुखाकर पकाते हैं और बाद को पीसकर काम में लाते हैं। हिन्दुस्तान में पोर्टलेंड सीमेंट मद्रास में तयार होता है। अब बंगाल में भी बनने लगा है। इसी की एक क़िस्म व्हाइट मार्टर (White Mortar) भी है।

Cerin (सेरिन)—Cork-wax देखो।

Cerosine (सीरोसाइन)—Sugar-cane wax देखो।

Ceroptic (सीरोप्टिक)—Pine wax देखो।

Chalcedony—एक क़िस्म का संग यशब। इसकी चमक मोम की सी होती है और भूरे या धवले रंग का होता है। कई क़िस्म के पत्थरों में इसका अंश बहुत पाया जाता है। यह कम क़ीमती नग है और ज़ेवरात में जड़ा जाता है। असल में यह एक प्रकार का स्फटिक है।

Chalk (चाक)—खड़िया। यह एक क़िस्म का चूनेदार नर्म पत्थर है। यह सफ़ेद, नर्म, अपार-दर्शक और रूखा ढोंका होता है। कभी कभी इसमें बालू, अलूमिना और 'मगनिशिया' मिला रहता है। यह कई प्रकार का होता है:—एक प्रकार का खड़या-पत्थर सख्त होता है और इमारत के काम में आता है। यह भट्टी में फूकने से चूना बन जाता है। इसे पीस और छानकर व्हाइटिंग (Whiting) दीवार पर क़लई करने की सफ़ेदी बनती है। दांत के मंजन की

अच्छी चीज़ है। रूपहले बरतन वगैरा इस से रगड़ कर सफ़ा किए जाते हैं, और पट्टियों पर लिखने के काम बहुत आती है। घड़ी के पुर्ज़े, शीशे इत्यादी इस से रगड़ने से खूब साफ़ हो जाते हैं। एक दूसरे क़िस्म की काले रंग की भी खड़िया होती है—यह एक प्रकार का स्लेट पत्थर है और इससे छापने की काली स्याही बनती है।

तीसरी प्रकार लाल रंग की होती है (यह एक प्रकार का गेरू है) जिसमें मट्टी और लोहे का अंश रहता है, यह पेन्टिंग (रंगसाज़ी) के काम आती है।

Chambreys—एक क़िस्म का कपड़ा।

Champagne (शम्पेन)—एक क़िस्म की मशहूर अंगूरी शराब। फ्रांस में ज्यादा बनती है और क़ीमती होती है। लग भग २,००,००,००० बोतल इसके हरसाल फ्रांस से बाहर चलान होते हैं।

Charcoal (चारकोल)—कोयला, लकड़ी का कोयला। यही कारबन (Carbon) है। शुद्ध कारबन स्वयम कम मिलता है इसलिए तयार किया जाता है। लकड़ियों को बन्द जगह वा बरतन में (जिसके अंदर हवा न जा सके) जलाते हैं, जो रह जाता है वही कोयला है। लकड़ी का कोयला (Vegetable charcoal) और हड्डी का कोयला (Animal charcoal) कहलाता है। उमदा कोयला वही होता है जिसके सुलगने या जलाने पर न धूँवां निकले और न ज्वाला उठे। कोयला किसी द्रव्य पदार्थ में नहीं घुल सकता। कोयला खराब गेस याने गन्दी हवा को अपने में सोख लेता है। इसलिए बदबू वग़ैरा या खराब हवा फैलने से रुकती है। पानी में की गंदगी खींच लेता है, इसलिए पानी साफ़ करने के लिए काम मे लाया जाता है। शक्कर में की मैल दूर करने के काम में भी आता है और बारूद भी इससे बनती है।

Cheese (चीज़)—पनीर। दही को सड़ाकर उसका पानी निथार लेते हैं और दबाकर तयार करते हैं। पनीर कई तरह की होती है और उनके तयार करने का तरीक़ा जुदा जुदा है। फ़िरंगी लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं।

Cherry sum (चेरी सम)—Apricot देखो ।

Chamois (शेमाय)—साबर, किमुख्त ।

Chillies (चिलीज़)—Capsicum देखो ।

China bark (चायना बार्क)—Cinchona देखो ।

China clay (चायना क्ले)—Kaolin देखो ।

China grass (चायना ग्रास)—चीना घास, । यह एक प्रकार की सेवार है जो गरम जल में गल जाती है और ठंडी होने पर जमकर थक्का हो जाती है । कंकूरा (बंगला नाम), रीहा (आसामी नाम), चूमा (चीन देश का नाम) । इसे दूध वग़ैरह के साथ मिलाकर पुडिंग वा फ़ीरनी बनाते हैं—

Chinchona bark (चिंकोना बार्क)—Cinchona देखो ।

Chinese nut (चायनीज़ नट)—मूंगफली । Ground nut देखो ।

Chinese date (चायनीज़ डेट)—बेर । Jujube देखो ।

Chinese wax (चायनीज़ व्याक्स)—चीन की मोम । चीन में यह मोम एक क़िस्म का कीड़ा बनाता है जैसे हिन्दुस्तान में लाख पैदा होती है।

Chinese white (चायनीज़ व्हाइट)—सफ़ेदा (White oxide of zinc) । यह रंग रौग़न के काम आता है । यह बहुत शुद्ध सफ़ेदा होता है ।

Chintz (चिंज़)—छींट, रंगीन छापेदार कपड़ा । पहिले इसका कारोबार हिन्दुस्तान में होता था और अच्छी अच्छी छींटें तयार होती थीं मगर अब कल की छींटों के आगे यह कारोबार बंद हो गया है ।

Chiretta (चिरेता)—चिरायता । यह बुखार और ख़ून साफ़ करने वग़ैरा की मशहूर दवा है ।

Chittagong Wood (चिटगांग उड)—चिरकसी, लाल देवदार वग़ैरा इसके कई नाम हैं । अंगरेज़ी में इसे व्हाइट सिडार (White Cedar) भी कहते हैं । यह लकड़ी फ़रनीचर बनाने में महोगनी की जगह बहुत काम आती है ।

Chlorate of Potash (क्लोरेट आफ़ पोटाश)—पुटाश । यह पोटाशियम साल्ट आफ़ क्लोरिक एसिड (Potassium Salt of Chloric Acid) है। यह रासायनिक पदार्थ आकसीजेन तयार करने, आतशबाज़ी, दियासलाई ख़ास करके सेफटी म्याचेज़ (Safety Matches) बनाने में काम आता है। यह पुटाश के नाम से मशहूर है। कोयले या गंधक के साथ इसे मिलाकर पटाखा बनाते हैं। केवल रगड़ने से ही यह भभक उठता है।

Chloride of Lime (क्लोराइड आफ़ लाइम)—यह मसाला मैल ख़ूब काटता है और कपड़ा निखारने के काम आता है। सीसे के संदूक़ में बुझा चूना बिछा कर उसमें क्लोरीन (Chlorine) गैस का संयोग करने से यह तयार होता है। ब्लीचिंग पौडर (Bleaching powder) भी कहते हैं।

Chlorine (क्लोरीन)—यह एक क़िस्म की गैस है जो नमक और सोडियम क्लोरेट (Sodium chlorate) में बहुत पाई जाती है। यह भारी, ज़र्दी मायल हरी रंग की, न जलनेवाली और दम घुटानेवाली गैस (वायू) है। इसका ख़ास इस्तेमाल कपास और लिनेन (Linen) सन वग़ैरा साफ़ करने के लिये होता है। हुनर व दवा के काम के लिए यह कई मसालों में मिलाई जाती है।

Chloroform (क्लोरोफ़ार्म)—यह एक मशहूर दवा है जिसके सूंघने से मनुष्य की ज्ञान शक्ति शून्य हो जाती है और वह नशे में बेहोश रहता है। उसे शस्त्राघात का भी ज्ञान नहीं होता। यह दवा कोई ५० या ६० साल से दर्याफ्त हुई है। कारबन, हाइड्रोजन और क्लोरिन इसके मुख्य तत्व हैं। यह चीज़ ब्लीचिंग पाउडर (Bleaching powder), अलकोहल और पानी से तयार की जाती है, बाद में गंधक के तेज़ाब से उसे साफ़ कर लेते हैं। क्लोरोफ़ार्म का रंग जल की तरह स्वच्छ है और वह भारी और उड़ जाने वाला द्रव्य है। चखने में इसका स्वाद मीठा और सूंघने में एक विचित्र प्रकार की मीठी सुगंधि होती है। ख़ालिस नहीं बेचा जाता क्योंकि रौशनी लगने से वह जल्द ख़राब हो जाता है।

Chocolate (चोकोलेट)—कोको नामक पेड़ के बीज को पीस कर पानी में सान लेने से कोको (Coaco or Cacoa) बनता है और जब उसमें मैदा, शकर या और कोई स्वादिष्ट पदार्थ मिलाते हैं तब उसे चोकोलेट कहते हैं। यह दूध या पानी में घोल कर खाया जाता है और वह बड़ा पुष्टिकर होता है। अंगरेज़ लोग इसे बहुत पसंद करते हैं। फ्रांस में 'चोकोलेट' बहुत बनता है। कोको का पेड़ अब नीलगिरी, मालाबार और सिलोन में होने लगा है।

Chromium (क्रोमियम)—यह एक प्रकार का धातु है। यह स्वयं तो किसी काम में नहीं आता परन्तु अन्य धातुओं के साथ मिलकर उस से बहुत काम की चीजें बनती हैं। स्वीडन और हंगरी में यह बहुत मिलता है और एक प्रकार के लोहाश्म (Iron ores) में मिला रहता है। पन्ने का सुन्दर हरा रंग क्रोमिक आक्साइड (Chromic oxide) के कारण ही से है, इस हरे रंग को क्रोम ग्रीन (Chrom green) कहते हैं। यह पदार्थ चीनी के बरतन और दीवाल पर मढ़नेवाले कागज़ पर रंगने के काम आता है। क्रोमेट आफ़ लेड (Chromate of lead) जिसे आम तौर से क्रोम यलो (Chrome yellow) याने सुनहला पीला रंग भी कहते हैं, कपड़े छापने में बहुत इस्तेमाल किया जाता है। बाइक्रोमेट आफ़ पोटाश (Bichromate of potash) अर्थात नारंजी कसीस फ़ोटोग्राफ़ी में और कापर व ज़िन्क एचिंग (Copper and Zinc etching) में काम आता है और यही बाज़ार में 'नारंजी कसीस' के नाम से मिलता है और इसे गंधक के तेज़ाब के साथ मिला कर तेल साफ़ करने का मसाला बनाते हैं। थोड़ा क्रोमियम लोहे में मिला देने से वह बेहद कड़ा और मज़बूत हो जाता है ऐसे लोहे को क्रोम स्टील (Chrome steel) कहते हैं।

Cidar (साइडर)—कड़वे सेब के रस का खमीर साइडर कहलाता है। इंगलिस्तान में बहुत तयार किया जाता है॥ इसका एरीयेटेड वाटर बहुत स्वादिष्ट होता है जिस सेब से यह बनाया जाता है वह खाने में नहीं आता। इसकी शराब फ्रान्स में बहुत बनती है।

Cigar, Cigarettes (सिगार, सिगरेट)—Tobacco देखो।

Cinchona (सिङ्कोना)—सिंकोना। यह एक प्रकार का वृक्ष है, इसकी कई जातियां हैं। इसी पेड़ की छाल से कुनैन (Quinine) बनती है। यह वृक्ष अब निलगिरी इत्यादि पहाड़ों में बहुत होने लगा है। पारी के बुख़ार की यह बड़ी अकसीर दवा है। सिंकोना की छाल को पेरुवियन बार्क, जेसुइट बार्क, चाइना बार्क, क्वीना, क्विनक्विना (Peruvian bark, Jesuit's bark, China bark, Quina, Quinquina) वग़ैरा भी कहते हैं। लाल छाल वाले पेड़ से उमदा कुनैन बनती है और ज़र्द छाल के पेड़ से उतनी अच्छी नहीं बनती।

सिंकोना की छालें हिन्दुस्तान से बाहर भी चलान होती हैं। सन् १९०८-९ में ३,१२,०३७ रतल ६७,०३०) की और सन् १९०९-१० में ८६,७९६) की ३८९२०० रतल रवाना हुई।

Cinnabar (सिनेबार)—शिंगरफ़—इसे सलफाइड आफ मरक्यूरी (Sulphide of mercury) भी कहते हैं। इसी से पारा ज्यादातर निकाला जाता है। इसमें ८६ फ़ी सदी पारा और १४ फ़ी सदी गंधक रहता है। शिंगरफ़ ज्यादातर उन् खानों वा चट्टानों में मिलता है जहां कोयला निकलता है। इसकी कलमें रेशेदार वा भुरभुरी होती हैं व डले छ-पहलू के। अबतक शिंगरफ़ बहुत ज्यादा स्पेन देश के मुक़ाम अलमदन (Almaden) से निकाला जाता था किन्तु अब कालीफ़ोरनिया में न्यू अलमडन (New Almaden) से भी ज्यादा निकलने लगा है। इद्रिया (Idria in Austria), जैरमनी, चीन व जापान में भी इसकी खान मिली है।

Cinnamon (सीनेमोन)—दारचीनी। यह एक पेड़ की सुगंधित छाल है जो गर्म मसाले का काम देती है और बतौर दवा के भी काम में आती है। इसका तेल बड़ा गुणदायक है। इसका पेड़ सीलोन, जावा इत्यादि में होता है।

Citric acid (साइट्रिक एसिड)—नीबू का सत वा तेजाब। नीबू, नारंगी, चकोतरा वग़ैरा में से एक प्रकार का तेज़ाब (acid) निकलता है उसे साइट्रिक एसिड कहते हैं। नीबू के रस को खड़िया या चूने के

साथ मिलाते हैं जिससे एक सुफ़ेद बस्तु बन जाती है जिसे साइट्रेट आफ कालशियम [Citrate of calcium] कहते हैं। और तब गंधक के तेज़ाब में इसे घोलते हैं, चूने का अंश नीचे जम जाता है और नीबू का तेज़ाब अलग हो जाता है जिसकी कलमें बन जाती हैं। यह सफ़ेद रंग का चूर्ण पानी में नहीं घुलता। साइट्रिक एसिड स्वादिष्ट और बहुत खट्टी चीज़ होती है और रेशम के कपड़े छापने व रंगने में इसका ज़ामिन या पुट दिया जाता है और रंगे हुये सूती कपड़ों का ज़ामिन उतारने के लिये इस्तेमाल होता है। इसके क्षारों को (साइट्रेट) Citrates कहते हैं। जैसे साइट्रेट आफ आयर्न (Citrate of iron), साइट्रेट आफ पोटाश (Citrate of potash), साइट्रेट आफ मेगनीशिया (Citrate of magnesia), साइट्रेट आफ अमोनिया (Citrate of ammonia) वग़ैरा।

Citron (सिट्रन)—गलगल। (एक प्रकार का बड़ा, खुदड़े व मोटे छिलके का नीबू) इसकी दूसरी जाति करना नीबू है। पहाड़ी नींबू भी इस में शामिल हैं। इनके छिलके मोटे होते हैं और इनकी क़द्र अधिक करके उनके छिलकों के कारण से है। क्योंकि उसमें खुशबूदार तेल रहता है। गलगल और पहाड़ी नीबू से दो तरह का तेल Oil of citron and Oil of cedrate निकाला जाता है जिसकी मांग बहुत है। सुगंधित द्रव्य बनाने के बहुत काम आता है। इसका अचार भी बनता है। इसी नीबू की तीसरी क़िसिम जम्बीरा नीबू है और चौथी क़िस्म मीठा नीबू यां संतरा नीबू को भी Citron कहते हैं। इटली देश के सिसिली ज़िले में इनके तेल निकालने के बहुत से कारख़ाने हैं।

Civet (सिवेट)—यह गाढ़ा महकदार तेल होता है। जो सिवेट नामक बिल्ली (civet cat) की नाभी से निकलता है। ताज़ा रौग़न पीला होता है। जो बाद में भूरा हो जाता है! यह तेल बहुत बदबूदार होता है पर थोड़े अंश में इसकी महक कस्तूरी की सी होती है! यह जगली जानवर अफरिका और अबिसीनिया मे बहुत होता है! इसे

मारते नहीं और हर साल उसकी नाभी की थैली से सिवेट द्रव्य निकालते हैं।

Claret (क्लेरेट)—एक प्रकार की शराब। इसका रंग लाल होता है और कई तरह की होती है। फ्रान्स देश में बहुत तयार की जाती है।

Clay (क्ले)—चिकनी मट्टी, गिल। हर क़िस्म की ऐसी मट्टी जो पानी से सनकर लेई सी बन जाय और भट्ठे में पकाने से ईंटे की तरह पकी मट्टी हो जाय उसे क्ले कहते हैं। इस मट्टी के विशेष अंश सिलिका याने बारीक रेत और अलूमिना हैं गो कि और द्रव्य भी इसमें मिले रहते हैं।

सबसे साफ़ चिकनी मट्टि चिनी मट्टी [China clay or Kaolin] है जिससे चीनी के बरतन वग़ैरा बनते हैं। उमदा बरतन बनाने की मट्टी को भी क्ले कहते हैं। चिकनी मट्टी और भी कई क़िस्म की होती है परन्तु व्यापार के काम में प्रायः दो तरह की मट्टी [१] आतशी मट्टी (Fire clay) और [२] चीन की मट्टी (China clay or kaolin) काम आती है। क्ले का अधिक अन्श खेत की मिट्टी में भी होता है—

Cloves (क्लोव)—लवंग, लौंग। इसका पेड़ मलक्का टापू, पेम्बो [Pembo], ज़ंजीबार वग़ैरा में होता है। इसका ज़िक्र चरक शास्त्र और वाल्मीकी रामायण में भी मिलता है। लौंग एक पेड़ का फूल है पर इस पेड़ की छाल, पत्ती, जड़ सभी खुशबूदार होती है। फूल की कलियां या तो हाथ से तोड़ी जाती हैं या लकड़ी से झाड़ ली जाती हैं और तब धूएं वा धूप में सुखाई जाती हैं, सूखने पर इनका रंग सियाह भूरा होजाता है असल में यह फूल लाल रंग के होते हैं। लौंगका तेल बहुत निकाला जाता है और बहुत बिकता है, उससे कई प्रकार के सुगंधित द्रव्य बनाते हैं। पशमीना में लगा देने से कीड़ा नहीं लगता। साबुन में भी मिलाया जाता है। इस देश में गरम मसाले व दवा में बहुत खाई जाती है। सबसे अच्छी लौंग अम्बायना [Amboyna] टापू से आती है जो डच लोगों के राज्य में है। पहिले लवंग का व्यापार उन्हीं के हाथ में था पर अब उसके पेड़ कई और टापुओं

में भी होने लगे हैं। हिन्दुस्तान में इसकी आमदनी ज्यादातर ज़ंजीबार और पेम्बा से आती है। सन् १९०९-१० में २४,१९,०००) की लवंग ३६,३६ टन् आई।

Coal (कोल)—पत्थर का कोयला। आज कल यह बहुत काम की चीज़ है। अगर आज यह न मिलता होता तो, जंगलों में लकड़ीयां न बचतीं और न मशीनें और अंजन इतने चल सकते। इसी की बदौलत कल चलती हैं। कोयले की चट्टान ज़मीन के अंदर मिलती हैं। इन्हीं को खोद कर कोयला निकाल लेते हैं। पत्थर के कोयले कई क़िस्म के होते हैं, उनमें से भी मुख्य यह हैं :— (१) ब्राउनकोल (Brown Coal) यह बेमेल नहीं होता। (२) बिटूमिनस (Bituminous) यह कड़े चौकोर ढोंके होते हैं जिस में ८८ फ़ी सदी कारबन रहता है।

(३) ऐथेरासाइट (Anthracite) यह सख्त, घन और प्रायः चमकदार होता है और छूने से करखा नहीं लगती, देर में सुलगता है, धूआं वो ज्वाला कम देता है पर बड़ी कड़ी आंच देता है, जहाज़ और अंजन में बहुत जलाया जाता है।

(४) कोनेल (Cannel) यह कोयला ठोस और चमकदार होता है और जलने पर खूब ज्वाला निकलती है। यह प्रायः गेस बनाने के काम आता है। कोयला दुनियां के बहुत हिस्सों में मिलता है। इंगलैंड में इस की बहुत बड़ी खाने हैं। इतना निकाले जाने पर भी कहा जाता है कि २०० बरस के लिए काफ़ी मौजूद है। हिन्दुस्तान में भी बड़ी बड़ी खाने हैं खास कर के बंगाल में।

करोड़ों बरस पहले प्राचीन काल में जो घने जंगलात किसी कारण से भूमि के अन्दर दब गए वही पेड़ पत्ते सड़कर कोयला हो गए हैं और अनेक काल तक दबे पड़े रहने से उनका रूपान्तर हो कर पत्थर सरीखा हो गया है। कभी कभी सूखे पेड़, पत्ती, डालियां खान में से पूरे पेड़ पत्ते की शकल में मिलती हैं। कोयले की चट्टानें कई इंच से लेकर कई फुट तक मोटी होती हैं।

सन् १९०९ में ११८७०११४ टन हिन्दुस्तान की खानों से निकाला गया था। १,००,९७,७७४ टन कोयला विदेशों से आया और १,१२,४१,५८२ टन बाहर रवाना हुआ, बाक़ी १,०७,२६,३०६ टन कोयला इसी मुल्क में खर्च के लिए रह गया।

Coaltar (कोलटार)—कोलटार, अलकतरा। इसे गेसटार भी कहते हैं। यह गाढ़ा, काला, तरल पदार्थ है और कोयला या मट्टी का तेल या पेट्रोलियम के कशीद करने पर निकलता है। किन्तु अब यह प्रायः कोल-गेस के कारखानों में गेस के साथ साथ कोयले से कशीद कर के निकाला जाता है।

यह पानी से भारी होता है और इस में तेज़ बदबू होती है। इस की ज्यादातर क़द्र इसलिए है कि इसमें से बेनज़ीन (Benzine) निकाला जाता है और बेनज़ीन में अनलीन रंग (Analine colour) याने 'बुकनी के रंग' तयार होते हैं। गंदी हवा को भी साफ़ करता है, लोहे पर लगा देने से मुरचा नहीं लगता इस कारण से रंगने का काम इस से लेते हैं।

Cobalt (कोबाल्ट)—कोबाल्ट। यह एक क़िस्म की सख्त धातु है। इस का रंग लोहे का सा लाली लिए हुए होता है, तुनुकमंज है और बहुत कड़ी आंच में गलने वाला है और चुम्बक से आकर्षित लोहे की तरह होता है। संखिया और गंधक से मिला हुआ पाया जाता है, शुद्ध नहीं मिलता। जरमनी से खास करके ज्यादा आता है। कोबाल्ट अकेला किसी काम में नहीं आता परन्तु कई चीज़ों में मिलाने से उत्तम रंग रौग़न बनता है। कांच में मिलाने से कांच सुन्दर आसमानी रंग का बनता है। क़ाग़ज़ रंगने के लिए जो स्माल्ट (Smalt) नाम का द्रव्य मिलता है वह नीले रंग का पीसा हुआ ग्लास याने कांच है जो आक्साइड आफ़ कोबाल्ट (Oxide of Cobalt) से रंग दिया हुआ होता है। मामूली आक्साइड आफ़ कोबाल्ट को ज़फ़री (Zaffre) कहते हैं जो इनेमल (Enamel) का रौग़न चढ़ाने में काम आता है। ईंट, चीनी मट्टी के बरतन,

कांच वग़ैरा पर आसमानी रंग रागने देने के लिए यह काम में लाया जाता है।

Coca (कोका)—कोका। यह पेड़ सौथ अमेरिका का है। इसी से कोकेन निकाली जाती है। सन् १८७० में इसका पेड़ सिलोन में लाकर लगाया गया। सन् १८७६ में मद्रास की एग्री-हारटिकलचरल सोसाइटी में एक लेख पढ़ा गया था जिसमें इस पेड़ की उपयोगियता देखाकर बताया गया था कि यह पेड़ हिन्दुस्तान में भी लाकर लगाया जाय। किन्तु सन् १८८५ तक इस पर अमल दरामद कुछ नहीं हुआ। मगर जब इस के सत्त 'कोकेन' के गुण जाने गए तब उक्त सोसाइटी ने कलकत्ते के बाग़ में और और भी कई जगह पेड़ मंगवा कर दिए। निलगिरी पहाड़ों में यह पेड़ लग गए। इनकी पत्तियां विलायत बहुत जाने लगीं हैं। लेकिन यहां कोई कारखाना नहीं खुला जो यहां कोकेन तयार करे। योरोप में इस की पत्तियों से उत्तेजक शराब तयार होती है। लेकिन उस के पीने से भूक कम हो जाती है। इस पेड़ में से एक खार निकली है जिसे कोकेन कहते हैं। कोकेन का गुण यह है कि देह पर जहां लगा दिया जाय वहां सुन्न हो जाता है इसलिए दर्द वग़ैरा कम करने व नश्तर की तकलीफ़ घटाने के लिए लगाते हैं, खास करके आंख बनाने में इसका ज्यादा इस्तेमाल होता है जिससे नश्तर की तकलीफ़ नहीं होती। हिन्दुस्तान में कोकेन खाने का भी बड़ा खराब रवाज हो गया था।, उससे बड़ा नुक़सान लोगों को पहुंचने लगा इसलिए कोकेन बेचने की मनाही का क़ानून बनाना पड़ा।

Cocain (कोकेन)—कोकेन। दक्खनी अमेरिका में [Erythroxylon Coca] नाम का पेड़ होता है यह उसकी पत्ती का सत्त है। वहां के लोग इसकी पत्तियां चबाते हैं! कोका की पत्तियों को ईथर में भिगाकर ईथर उड़ा दिया जाता है और खुद्द को पानी के साथ उबालकर उसमें मेगनीशिया का मेल देकर सुखाने के बाद अमिल अलकोहल [Amyl alcohal] द्वारा कोकेन निकाला जाता है। इसको देह पर लगाने से उतना भाग शून्य हो जाता है, पीड़ा प्रतीत नहीं होती।